आवश्यक सूचना

पाठकों को सूचित किया जाता है कि यह पुस्तक श्रीयुत् बाबू भैरूँदानजी हाकिम-कोठारी की ओर से भेंट दी जाती है। अतएव जिन सज्जनो को इसकी आवश्यकता हो, वे निम्नलिखित पते से मंगवा लें।

रावतमल भैरूँदान हाकिम-कोठारी

कोठारियों की गवाड़ — १४, पार्तूगीज चर्च स्ट्रीट

बीकानेर — कलकत्ता

श्री अभयदेवसूरि-ग्रन्थमाला—गुच्छक (१)

श्री नित्यस्मरण-पाठमाला

और

स्नात्र पूजा

संशोधक:—

शासन-नायक, परमपूजनीय, पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय—
शास्त्र-विशारद बृहत् (बड़) गच्छीय श्रीपूज्य
जैनाचार्य श्रीमज्जिनसिद्धसूरीश्वर शिष्य
पण्डित काशीनाथ जैन

वीर संवत् २४७५] मूल्य पठन [विक्रम संवत् २००६

प्रकाशकः—

शवतमल भैरूँदान हाकिम कोठारी

बीकानेर

निवेदन ।

हर एक आस्तिक-समाजके लिये प्रभु भक्तिसे बढ़कर और कोई विशेष उपादेय चीज संसारमें नहीं । ईश्वर-भक्तिके अनेक उपायोंमें उनके विविध गुणोंका, स्तुति और स्तोत्रों द्वारा स्मरण करना एक मुख्य और अवश्य उपाय है । यही कारण है कि हमारे परम आस्तिक जैन सम्प्रदायके अनेक धुरन्धर आचार्योंने विविध भाषाओंमें असंख्य स्तुति और स्तोत्रोंकी रचना कर स्वयं भगवद्-भक्तिका अपूर्व लाभ प्राप्त कर अन्य जीवोंके लिये भी उसका रास्ता सरल कर दिया है । अब आवश्यकता है केवल उन उत्तम २ स्तुति स्तोत्रोंको और उसे ठीक २ समझनेके लिये अन्यान्य साहित्यके ग्रन्थोंको भी प्रकाशित करनेकी, जिससे सब कोई सुग-मतासे उनका लाभ उठा सके ।

थोड़े ही समयमें यह नित्य-स्मरण-पाठमाला के प्रथम द्वितीय तृतीय और चतुर्थ संस्करणकी प्रतियाँ खतम होना ही इस बातका ज्वलंत दृष्टान्त है। इस पंचम संस्करणमें शुद्धताकी ओर विशेष ध्यान दिया गया है और संस्कृत प्राकृत भाषाके अनभिज्ञ पाठकोंको भी शुद्ध उच्चारण करनेमें सुगमता हो इस हेतुसे पदच्छेदादि भी यथास्थान किया गया है। इस आवृत्तिमें जयतिहुअण स्तोत्र, गौतम स्वामीका स्तोत्र तथा दादाजीके स्तोत्र आदि भी जोड़ दिये गये हैं, जो कि तृत्तीयावृत्ति में नहीं थे।

संशोधन-कार्यमें विशेष ध्यान देनेपर भी प्रेस की गलती दृष्टीदोषसे या मशीनकी रगड़ लगनेके कारण किसी स्थानपर मात्रायें टूट गई हों, तो पाठकगणसे नम्र प्रार्थना है कि वे उसे सुधार कर पढ़नेका अनुग्रह करें।

आपका—

भैरूंदान हाकिम कोठारी

विषयानुक्रमणिका ।

स्तोत्राणि ।

श्रीयुत रावतमलजी कोठारी
बिकानेर निवासी

श्री भैरूंदानजी कोठारी, बीकानेर

दानवीर सेठ श्री भैरूंदानजी कोठारी का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म से मरण का सम्बन्ध अनादि अनंत निश्चित है। विश्व के समस्त प्राणियों में कोई भी इस प्राकृतिक नियम का अपवाद नहीं अर्थात् जो जन्मता है वह मरता अवश्य है। वास्तव में देखा जाय तो प्राणी के जन्म के साथ ही मरण भी प्रतिक्षण हो रहा है पर हमारी स्थूल बुद्धि उसे ग्रहण नहीं कर पाती। इसी से हम जन्म के समय हर्ष एवं मरण के समय शोक अनुभव करते रहते हैं। जैन-परिभाषा के अनुसार गत्यंतर में जन्म लेने के पूर्व ही आयुष्य-कर्म बँध जाता है और उस के साथ साथ उस जीवन की स्थिति की मर्य्यादा भी निश्चित हो जाती है कि अमुक जीवयोनि में यह प्राणी इतने समय के लिए खेल करने जा रहा है, अतः उस स्थिति या काल की समाप्ति ही मरण है। वस्तुतः जीवन की भाँति मरण भी प्रकृति का एक वरदान ही है, जिससे जागृति एवं नव-चेतन का अटूट सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। अनेक बार विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यदि मनुष्य के लिए मरण निश्चित न होता तो न मालूम जीव की आसक्ति कैसी प्रगाढ़ होती जिससे छूटने का उसके लिए कोई कारण ही न होता। हम सब अपना मरण

निश्चित जानने पर भी कैसे विषय-लु व है कि हमारे सामने अनेक प्राणी मरण-धर्म प्राप्त कर हमें सजग होने का सुघोषा-घट बजा रहे हैं व सत्पुरुष एवं सत्शास्त्र हमारी मोह-निद्रा भग करने को कान खट-खटा रहे हैं। अनेक प्रकार की आधि, व्याधि, उपाधि व सयोग-वियोग हमें शिक्षा दे रहे हैं, फिर भी वे सब बेकार हो रहे है। समय समय पर निमित्त कारणों को पाकर सजग होते है पर उसी के साथ पुनः मोह निद्रा आखों में घुलने लगती है। महात्मा बुद्ध जरा एवं मरण का ताडव-नृत्य एक बार देखकर ही ससार से उद्विग्न हो उठे थे पर हम उन्ही प्रसंगों को बार बार देखते हुए ठठारे की बिल्ली बने बैठे है। न मालूम कब हमारी चिरकालीन मोह-निद्रा भग होगी।

तन, धन, स्वजनादि विनाश-शील होने से चतुर व्यक्ति इनसे सार-पदार्थ-स्वपरोपकार रूप धर्म ग्रहण करने में गाफिल नहीं रहते। उनका तन, मन, धन लोक-सेवा में अर्पित सा रहता है। वे मौका चूकते नही एव प्राप्त साधन, शक्ति व समय का सदुपयोग कर कृत-कार्य व धन्य बन जाते हैं। मनुष्य का देह नहीं रहता पर उनका यशःशरीर दिनों-दिन दीप्तिमान एव दिग्दिगत व्यापी होता रहता है। अतः जो अपने पीछे सुख्याति छोड गये वे मरे नहीं, अमर कहलाते हैं। उनके सत्कार्य - कलाप का कीर्ति-स्तंभ मानव ससार को दिव्य-सदेश देता रहता है। उनका आदर्श चरित्र प्रेरणा देता हुआ हमें मार्ग-प्रदर्शन करता रहता है।

स्वर्गीय सेठ भैरूदानजी कोठारी ऐसे ही यशस्वी और बडे ही

दानी पुरुष थे। आप धर्मप्रिय, उदारमना, कला-उन्नायक, विनम्र एवं मिलनसार व्यक्ति थे। कहा जाता है कि आपके पूर्वज बीकानेर राज्य में हाकिम के पद पर प्रतिष्ठित थे, इससे आपका गोत्र हाकिम-कोठारी के नाम से प्रसिद्ध है। आपका जन्म सं० १९२८ के वैशाख कृष्णा २ शनिवार को गुजरात के दाहोद नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री का नाम रावतमलजी था। दाहोद में ये कपडे का व्यापार करते थे। जब आपकी उम्र केवल ६ वर्ष की थी तो आपकी माताजी का स्वर्गवास होगया। अतः आपके पालन-पोषण का समस्त भार आपके पिता-श्री पर आ पडा। आपने प्रारंभिक शिक्षा भी दाहोद में प्राप्त की और उसके पश्चात व्यापार में लग गये, पर आपको उसमें विशेष सफलता प्राप्त न हुई। सन् १९५५ में आप कलकत्ते पधारे और पहले १०) मासिक मे नौकरी शुरू की। फिर विलायती कपडे का व्यापार करने लगे, पर उसमें भी आपको विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई। इसी बीच संवत् १९५६ मे आपका विवाह हो गया। तदनंतर सं० १९६४ मे आपने स्वदेशी कपडे की दलाली का काम शुरू किया और तभी से आपकी उत्तरोत्तर उन्नति होती गई। आप रामपुरिया, मोहनी, इण्डिया, केसरी आदि अनेक मीलों के दलाल हो गये व रावतमल भैरूदान के नाम मे आपका व्यापार बढता चला गया। साधारण स्थिति से आप अपनी योग्यता से बहुत उन्नति को प्राप्त हुए। सद्भाग्य से आपको पत्नी भी बडी सुशील, दान-प्रेमी एवं धर्म-निष्ठ प्राप्त हुई। अतः आपकी धर्म भावना मे बहुत ही अभिवृद्धि हुई। सं० १९७९ में जब आपकी पत्नी ने नवपदजी

का उद्यापन किया, तब आपने खुले हाथ ५०-६० हजार रुपये उद्यापन में खर्च किये। जिसकी स्मृति, चांदी के कला-पूर्ण समवशरण से आज भी बनी हुई है। इसके निर्माण में उन दिनों लगभग १० हजार रुपये लगे। बीकानेर में ही नहीं बल्कि कलकत्ते के सिवाय अन्य स्थनों में भी कही ऐसा सुन्दर सिंहासन शायद ही मिलेगा। जिस प्रकार आपके मकान आदि आपके शिल्प-स्थापत्य की गभीर स्थानीय चिन्तामणिजी के मंदिर को ही लीजिए — आपकी देखरेख में आने पर आपने उसकी ऐसी सुन्दर व्यवस्था की है जो दूसरों के लिए असभव प्रायः थी। आपने करीब १५ हजार रुपये घर से खर्च कर उसकी आमदनी बढा दी और कभी समाज को उसके चदे के लिए शब्द तक नहीं कहा।

इसी प्रकार नमिनाथजी के मंदिर के दरवाजे को ही लीजिए। जब लक्ष्मीनारायण पार्क में दरवाजे के निकलने की कोई उम्मीद नहीं रही, उल्टा राज्य की ओर से प्रतिबन्ध लगा दिया जाने लगा तो आपने तुरन्त ही ४ हजार रुपये कोलायत फड में अपने घरसे देकर राज्य के नक्शे के अनुसार दरवाजा बनाने का भार भी अपने ऊपर उठा लिया जिसमें आपके ११ हजार रुपये के क़रीब लग चुके है।

बोहरों की सेरी के मदिर बनवाने का कार्य उपासरे की बाइयों के कहने से आपने प्रारंभ करवा दिया पर आपके हाथ (जो स्वय शिल्प-स्थापत्य के पारखी व कला-प्रेमी हों) साधारण मंदिर बनवाना, सभव न था, अतः खर्च बहुत अधिक पड गया। उपासरे

की बाइयों ने इतने रुपये देने की असमर्थता प्रकट की तो आपने तुरन्त उनके दिये हुए समस्त रुपये लौटा दिये व मन्दिर बनवाने व प्रतिष्ठादि का खर्च जो ५० हजार के करीब था स्वयं वहन किया ।

ये तीन कीर्ति-गाथाएं तो स्थानीय मंदिरों की बतलाई गई। अब श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि उपाश्रय का हाल भी सुनिये । सूरिजी के जानकारी एवं कलाप्रेम का परिचय देते हैं, यह समवशरण भी आपके मनोरम कला-प्रियता का परिचायक है ।

शिक्षा व साहित्य-प्रकाशन में भी आपका दान विशेष रूप से उल्लेखनीय है । वैसे तो आपने नित्य-स्मरण-पाठमाला, ३५बोल सग्रह आदि ग्रन्थो के कई सस्करण छपवाकर अमूल्य वितरण किये ही थे पर हिन्दी भाषा में जैन महापुरुषों के सुबोध जीवन-चरित्रों को भी आपने प्रकाशन करवा कर जैन साहित्य की बडी सेवा की। प० काशीनाथ जैन ने ऐसे ग्रथों के प्रकाशन का कार्य अपने हाथ में लिया था पर कोई भी कार्य द्रव्याभाव के कारण चल नहीं सकता । अतः आपने आदिनाथ जेन-साहित्य-माला के सचालनार्थ ५ हजार का दान दिया। इसीसे वे ३०।४० चरित्रो के प्रकाशन में समर्थ हो सके । राजस्थानी साहित्य-पीठ को भी राजस्थानी साहित्य के परिचायक पुस्तक प्रकाशन का आपने पूरा खर्च दिया था । आपने जिनदत्तसूरि-ब्रह्मचर्याश्रम में रु० ३१००) देकर सेठानीजी के नाम से पुस्तकालय स्थापित किया व भाडारकर इन्स्टीच्यूट. पना को १

हजार रुपये दिये। शिक्षण-संस्थाओं को आपने हजारो रुपये दान दिये। स्थानीय श्वे० जैन पाठशाला को पहले आपने ५,१००) दिये थे फिर मासिक सहायता देते गये व अन्त में २००) महीने का स्थायी प्रबन्ध कर गये। इसी प्रकार कलकत्ते के मित्र मडल विद्यालय को ३१००) दिये व ओसिया, पालीताना आदि के विद्यालयों को भी अच्छी सहायता दी। आत्मानंद-विद्यालय अंबाला, को भी आपने ५०००) दिये थे।

आपकी दानवीरता की गाथा कहा तक कही जाय। लूण-करणसर के पास फूलदेसर नामक ग्राम में जलाभाव से लोग बडे दुःखी थे। आपने १७।१८ हजार रुपये लगा कर वहा कुँआ बनवा दिया।

यहा आपके एक विशिष्ट स्नानगृह निर्माण का भी उल्लेख कर देना आवश्यक समझता हू। हमारे समाज में धनियों की तो कमी नहीं पर ऐसी यथोचित सूझ-बूझ व उदारता की कमी बहुत अखरती है।

मरण-धर्मा मनुष्यो के लिए श्मशान जाने का कार्य पडता ही रहता है। हमारे यहा दाह के अनतर स्नान करने के लिए उन्हें बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती थी। आपका ध्यान इस ओर गया और गोगा दरवाजे के बाहर आपने एक आदर्श स्नानगृह भी बनवा दिया जो हमेशा के लिए आपका स्मारक बन गया है। जब तक वह

रहेगा सेठ भैरूदानजी का नाम पुन: पुनः स्मरण किया जाता रहेगा।

आपकी दूसरी महान् विशेषता शिल्प-स्थापत्य की सूक्ष्म परख के साथ साथ कला-उन्नायक, होना है। कला-पूर्ण, सुन्दर से सुन्दर एवं दृढ भवनादि बनाने का आपको बडा ही शौक था। लाखों रुपये आपने अपनी हवेली व कोठी बनाने में खर्च किये थे। आपकी हवेली तो एक म्यूजियम की भांति दर्शनीय-स्थान है। जिसको देखकर प्रत्येक व्यक्ति को आपकी कला-प्रियता व शिल्प-ज्ञान का भली भाँति परिचय हो जाता है। आपके ये कीर्ति-स्मारक चिर-स्थायी रहें, इसकी व्यवस्था आप अपनी विल में कर गये हैं। स्थानीय बोहरों की सेरी में स्थित श्रीमहावीर स्वामी का मंदिर, नमिनाथ जी का दरवाजा, नाल के दादाजी का जीर्णोद्धार, आदर्श महत्तरा-रत्न श्री स्वर्णश्रीजी की छत्री आपके सुदृढ़ एवं सुन्दर गृह-निर्माण कला-विशारद होने के आदर्श-प्रतीक हैं।

यह तो हुई आपकी उदारता, दान-वीरता व कला-प्रियता की बात, पर आप में विनम्रता, अतिथि- सत्कार, मिलन-सारिता आदि अनेक ऐसे सद्गुण थे जिनकी तुलना मिलना कठिन है। मैं उनके सामने एक बच्चा सा हूं पर जब भी गया वे खडे होकर अभ्यर्थना करते, मेरी कही हुई बातों को बडी सहृदयता से सुन कर उनका यथोचित संतोषप्रद उत्तर प्रदान करते। उन सब बातों व व्यवहार के स्मरण मात्र से मैं गद्गद हो जाता हूं।

पुण्योदय से लक्ष्मी की प्राप्ति तो बहुत से लोगों को हो जाती है, पर उसके उपभोग एवं सदुपयोग का विवेक बहुत ही कम लोग कर पाते हैं। बहुत बार तो उसका दुरुपयोग ही होता देखा जाता है। माननीय कोठारीजी उन्ही विरले व्यक्तियों में से थे, जिन्होंने धन का उपभोग एवं सदुपयोग बड़ी खूबी के साथ किया। आपका जीवन एक रईसी जीवन था। वैसे निजी परिवार रूप में आप तथा आपकी पत्नी, दो ही थे, परन्तु आपका परिवार विशाल हो गया था। सैकड़ों व्यक्ति आपके यहा परिजन की भाँति आश्रय पाते रहे हैं। आपकी घोड़ा, गाड़ी, मोटर, बासन, बरतन, जेवर आदि समस्त वस्तुएं हर समय सब के उपभोग करने के लिए उन्मुक्त थीं। कोई भी व्यक्ति चाहे छोटे से छोटा व अपरिचित भी आगया और उसने बीमारी, विवाह व अन्य व्यवहारिक कार्यों के लिए कोई चीज मांगी तो वह निराश होकर कभी नहीं लौटता था। हर एक के दिल में आपके उदार व्यवहार से यह आशा निश्चित सी रहती थी कि वहा जाने पर काम हो ही जायगा। थोड़े बहुत साधन हरएक गृहस्थ के घर में एकत्र रहते है पर अनुदारता से उन्हें हरएक को उपभोग के लिए देने में संकोच रहता है। पर आपने तो जेवर बासन-बरतनादि वस्तुओं का इतना बड़ा संग्रह, दूसरो के लाभार्थ ही किया था। अमीर-गरीब सभी उनसे समान रूप से लाभ उठा सके, इसलिए आपने ऐसी सुन्दर व्यवस्था कर रखी थी कि जिन जिन व्यक्तियों को जिन-जिन वस्तुओं की जरूरत हो वे अपना

नाम व वस्तुओं की संख्या लिखा जावे। यथासमय सबको आवश्यकतानुसार वस्तुए बांट कर दे दी जाती थीं। किसीको निराश करना तो मानो आपने सीखा ही न था।

वैसे तो आपके पास कोई भी व्यक्ति किसी चदेको लेकर गया तो खाली हाथ नहीं लौटा। पर धार्मिक कार्य, मदिर-उपाश्रय, साधु-साध्वी, शिक्षा-प्रचार, साहित्य-प्रकाशन व दीन-दुःखियों की सहायता में तो आपका दान वडी पवित्र भावना से होता था। शिष्य यति तिलोकमुनि ने उनके विशाल ज्ञान-भडार को बरबाद कर उपाश्रय को भी बेच डालने की तैय्यारी करली। हमारी कोटडी में २ चातुर्मास करने के कारण सूरिजी के साथ, हमारा विशेष धर्मानुराग होगया था। अतः हमने उनकी ट्रस्ट की हुई सम्पत्ति को सुरक्षित रखना अपना परमावश्यक कर्त्तव्य समझा व उचित कार्यवाही कर उपाश्रयादिका कब्ज़ा प्राप्त कर लिया। उसके अदालती खर्च व उपाश्रय के जीर्णोद्धार के लिए आपसे सहयोग देने का निवेदन किया तो २॥ हजार रुपये तुरन्त भर दिये व मगनमलजी पारख से भी भरवा दिये। भावी सुरक्षा के लिये आपने उसका ट्रस्टी होना भी स्वीकार कर लिया था। आपका व हमारा विचार उसे एक आदर्श धर्म-भवन बनाने का था पर उनके आकस्मिक निधन हो जाने के कारण एक बडा सहयोग खो गया।

अपनी पत्नी के नाम से स्थापित स्थानीय चाँद-कुमारी औषधालय ने तो आपको असख्य पुण्य का भागी बनाया है जिसका खर्च ८००) मासिक है ।

कलकत्ते में श्वे० जैन-समाज का भवन नहीं था । उसके लिए बात चलने पर आपने ७।। हजार रुपये का चंदा भरा और ट्रस्टी होगये। आपने उसके लिए १५ हजार रुपये पुनः दिये। पर खेद है कि आपकी विद्यमानता में वह भवन तैयार न हो सका ।

नाल के दादाजी व पद्मप्रभुजी के मदिर का भी आपने १० हजार रुपये लगाकर जीर्णोद्धार करवाया । कलकत्ते की दादावाड़ी में मार्बल पत्थर की फर्श बनवाई । नाल दादाजी के कुड की मरम्मत व आगोर बनाने मे भी आपने १।। हजार रुपया लगाया था ।

आपने अपने हाथसे लाखो रुपये कमाये और लाखो ही खर्च किये । आवश्यकीय वस्तुओं के समान धन-दान में भी आपके समान विरले ही होंगे । आपने जीवन में कई लाख रुपये विविध व्यक्तियों व संस्थाओं को दान दिये । जीवन की आखिरी घडी में भी आपने उसी दान-धर्म को सबसे प्रधान स्थान दिया । सं० २००५ पौष शुद ७ वृहस्पतिवार की रात को करीब १२ बजे जब आप अस्वस्थ हुए तो प्रातःकाल होते ही एक ओर डाक्टरों का आना प्रारंभ हुआ तो दूसरी ओर वकीलों को भी बुलाया ।। बीमार होते ही न मालूम कैसे उन्हें अपनी भावी गई थीं कि, तुरन्त अपने बम्बई के ४ लाख के मकान

का ट्रस्ट कर गये। इसकी आमदनी लगभग १२००) मासिक हैं। इसमें से अपनी धर्मपत्नी के नाम से स्थापित औषधालय को स्थायी बनाने के लिए (जिसके लिए मकान बनवा कर औषधालय के नाम रजिस्ट्री करवा दी) मासिक ८००) व श्रीजैन श्वेताम्बर पाठशाला को २००) महीना व अन्य धार्मिक कार्यों के लिए अवशेष आमदनी का सदुपयोग होते रहने की आपने लिखापढी करवादी। इस अन्तिम दान द्वारा आपने अपनी दान-वीरता पर स्वर्ण-कलश चढ़ा दिया है।

वृद्धावस्थादि के कारण इधर कुछ वर्षों से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था, अतः आपने दीर्घदृष्टि से चंपालालजी को गोद भी ले लिया था। उनका विवाह-सम्बन्ध स्थिर कर विवाह की तैयारियाँ कर रहे थे और इस कार्य से निवृत्त होकर आपका विचार एक सुन्दर धर्मशाला बनाने का था। पर सपूर्ण कामनाये किसी भी व्यक्ति की सफल होना कठिन है। अतः कराल काल ने उनकी ये दो इच्छाएँ पूरी नहीं होने दीं और उन्हे बीच ही में उठाकर उनकी आशालता पर तुषारपात कर दिया। सं० २००५ पौष शुक्ला ६ को आपका स्वर्गवास हो गया।

अन्त में दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति की कामना करते हुए, उनकी धर्मपत्नि एव उनके सुपुत्र श्री चंपालालजी के प्रति समवेदना प्रकट करते हुए अपना वक्तव्य समाप्त करता हू।

— अगरचन्द नाहटा

कीर्ति-गान

दीन हीन को दुखी देखकर, सेवा की औषध दे दान।
देख प्रसन्न होते अतिथी को, देते हैं उनको सनमान॥

आवश्यकता पूरण करके, कर देते उनको धनवान।
ऐसे धन उदार हृदय के, नर विरले हैं निरअभिमान॥

दशों कोस के बीच जहां पर, जल की बूंद न मिलती थी।
उसी फूलदेसर मे सनसन, रूखी वायु चलती थी॥

एक भव्य सुविशाल कूप, बनवाकर जन दुख दूर किया।
भागीरथ ने जैसे गंगा, लाकर जग को पूत किया॥

धर्म-ग्रंथ की प्रतियां जिनने, बहुत द्रव्य व्यय करके।
जनता के हाथों पहुँचाई, बहुत परिश्रम सह करके॥

नेमिनाथ मंदिर का फाटक, भव्य नव्य निर्माण किया।
जिसे देख नर-नारी गण का, हर्षित होवे परम हिया॥

श्री सनातनधर्म आयुर्वेद महाविद्यालय

बीकानेर की ओर से समर्पित अभिनन्दन पत्र से उद्धृत

मार्ग शु० ६ सं० २००२

श्रीनित्यस्मरण-पाठमाला

॥ अथ नवकार मन्त्र ॥

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्व-साहूणं । एसो पंच-णमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

अथ सप्त स्मरणानि

अजित-शान्ति-स्तवन ।

अजिअं जिअ सव्व भयं, संतिं च पसंत सव्व गय पावं । जयगुरु संति गुण करे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा) ववगय

मंगुल भावे, तेहं विउल तव णिम्मल सहावे। णिरुवम महप्प भावे, थोसामि सुदिट्ठ सब्भावे ॥ २ ॥ (गाहा) सव्व दुक्ख प्पसंतीणं, सव्व पाव प्पसंतीणं। सया अजिअ संतीणं, णमो अजिअ संतीणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो) अजिअ जिण ! सुह पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! णाम कित्तणं। तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ ४ ॥ (मागहिआ) किरिआ विहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्खयरं, अजिअं णिचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धि गयं। अजिअस्स य संति महा मुणिणो वि अ संति करं, सययं मम णिव्वुइ-कारणयं च णमं सणयं ॥ ५ ॥ (आलिंगणयं) पुरिसा जइ दुक्ख वारणं, जइअ विमग्गह सुक्ख कारणं। अजिअं संति च भावओ, अभय करे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ (मागहिआ) ...२ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जर मरणं, सुर

असुर गरुल भुयग वइ पयय पणिवइयं । अजिअ मह मवि अ सुणय णय णिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि दिविज महिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ [संगययं] तं च जिणुत्तम मुत्तम णित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंति विमुत्ति समाहि णिहिं । संतिअरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहि वरं दिसउ ॥ ८ ॥ [सोवाणयं] सावत्थि पुव्व पत्थिवं च वर हत्थि मत्थय पसत्थ वित्थिण्ण संथियं, थिर सरित्थ वत्थं मयगल लीलाय माण वरगंध हत्थि-पत्थाण पत्थियं संथवारिहं । हत्थि हत्थ बाहु धंत कणग रुअग णिरुवहय पिंजरं, पवर लक्खणो वचिय सोम्म चारु रूवं, सुइ सुह मणाभिराम परम रमणिज्ज वर देवदुंदुहि णिणाय महुरयर सुह गिरं ॥ ९ ॥ (वेड्डओ) अजियं जिआरि गणं, जिअ सव्व भयं भवोह रिउं । पणमामि अहं पयओ पावं

पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ (रासालुद्धओ) कुरु जणवय हत्थिणाउर णरीसरो पढमं तओ महा चक्कवट्टि भोए महप्पभावो जो बावत्तरि पुरवर सहस्स वर णगर णिगम जणवय वई, बत्तीसा राय वर सहस्साणुआय मग्गो । चउदस वर रयण णव महा णिहि चउसट्ठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वई चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी, छण्णवइ गाम कोडि सामी आसीज्जो भारहम्मि भयवं ॥ ११ ॥ (वेड्डओ) तं संतिं संति करं, संतिण्णं सव्व भया । संतिं थुणामि जिणंसंतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ (रासाणंदियं) इक्खाग विदेह णरीसर णर वसहा मुणि वसहा णव सारय ससि सकलाणण विगय तमा विहुय रया । अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महा मुणि अमिय बला विउलकुला पणमामि ते भव भय मूरण जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ (चित्तलेहा) देव दाणविंद चंद सूर वंद हट्ठ

तुट्ट जिट्ठ परम लट्ठ रूव, धंत रुप्प पट्ट सेय सुद्ध णिद्ध धवल दंति पंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअ वंद धेअ सव्वलोअ भाविअ प्पभाव णेअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ (णारायओ) विमल ससि कलाइरेअ सोम्मं, वितिमिर सूर कलाइरेअ तेअं। तिअस वइ गणाइरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ (कुसुमलया) सत्तेअ सया अजियं, सारीरेअ बले अजिअं। तव संजमे य अजिअं, एस थुणामि जिणमजिअं ॥ १६ ॥ (भूअगपरिरिंगिअं) सोम्म गुणेहिं पावइ ण तं णव सरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ ण तं णव सरय रवी। रूव गुणेहिं पावइ ण तं तिअस-गणवई, सार गुणेहिं पावइ ण तं धरणिधर व ई॥ १७ ॥ (खिज्जिअयं) तित्थ वर पवत्तयं तम रय रहिअं, धीर जण थुअच्चिअं चुअकलि कलुसं। संति सुह प्पवत्तयं ति गरण

पयओ, संतिमहं महामुणि सरण मुवणमे ॥ १८ ॥
(ललिअं) विणओ णय सिरि रइअंजलि
रिसिगण संथुअं थिमिअं, विबुहाहिव धणवइ
णरवइ थुअ महिअच्चियं बहुसो । अइ रुग्गय
सरय दिवायर समहिअ सप्पभं तवसा, गयणं
गण विअरण समुइय चारण वंदिअं सिरसा
॥ १९ ॥ (किसलय माला) असुर गरुल
परिवंदिअं, किण्णरोरग णमंसिअं । देव कोडि
सय संथुअं, समण संघ परिवंदिअं ॥ २० ॥
सुमुहं अभयं अणहं, अरयं अरुयं ।
अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥
(विज्जुविलसिअं) आगया वर विमाण
दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ।
ससंभमो अरण खुभिअ लुलिअ चल कुण्डलं
गय किरीड सोहंत मउलि माला ॥ २२ ॥ (वेड्ढ-
ओ) जं सुर संघा सासुर संघा वेर विउत्ता
भत्ति सुजुत्ता, आयर भूसिअ संभम पिंडिअ-

सुट्ठु सुविम्हिय सव्व बलोघा। उत्तम कंचण रयण परूविअ भासुर भूसण भासुरि अंगा, गाय समोणय भत्ति वसागय पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥ २३ ॥ (रयणमाला) ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइया स भवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तयं) ॥ तं महामुणि महंपि पंजली, राग दोष भय मोह विज्जअं। देव दाणव णरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं णमे ॥ २५ ॥ (खित्तयं) ॥ अंब-रंतर वियारणिआहिं, ललिअ हंस वहू गामि-णिआहिं। पीण सोणि त्थण सालिणिआहिं, सकल कमल दल लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ (दी-वयं) ॥ पीण णिरंतर थ्यण भर विणमिअ गाय-लयाहिं, मणि कञ्चण पसि ढिल मेहल सोहिअ सोणि तडाहिं। वर खिखिणि णेउर सतिलय वलय विभूसणियाहिं, रइकर चउर मणोहर

सुन्दर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ [चित्तक्खरा] देव सुन्दरीहिं पाय वन्दिआहिं, वन्दिआ जस्स ते सुविक्कमा कमा अप्पणो णिडालएहिं मंडणोडुण पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंग तिलय पत्त लेह णामएहिं चिल्लएहिं संगयं-गयाहिं, भत्ति सण्णिविट्ठ वंदणा गयाहि हुन्ति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ (णारायओ)
तमहं जिणचंद, अजिअं जिअ मोहं ।
धुअ सव्व किलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥
(णंदिअयं) ॥ थुअवंदिअस्सा रिसि गण देव गणेहिं, तो देव वहूहिं पयओ पणमिअस्सा । जस्स जगुत्तम सासणअस्सा, भत्तिवसागय पिंडिअआहिं । देव वरच्छरसा वहुआहिं, सुग्वर रइ गुण पंडिआहिं ॥ ३० ॥ (भासुरयं) वंस सद्द तंति ताल मेलिए, तिउक्खराभिराम सद्द मीसए कइ अ, सुइ समाणणे असुद्ध सज्ज गोअ पाय जाल घंटिआहिं, वलय मेहला-

कलावणे उराभि राम सद्द मीसए कए अ देवणट्टि आहिं, हाव भाव विब्भम प्पगारएहिं, णच्चिऊण अंग हारएहिं वन्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय सव्व सत्त सन्तिकारयं, पसंत सव्व पाव दोस मेस हं णमामि संति मुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ (णारायओ) छत्त चामर पडाग जूअ जव मंडिआ, ज्झय वर मगर तुरग सिरिवच्छ सुलंछणा । दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिआ, सत्थिअ वसह सीह रह चक्क वरंकिया ॥ ३२ ॥ (ललिअयं) सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा । पसाय सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहि जुट्ठा ॥ ३३ ॥ (वाणवासिआ) ते तवेण धुअ सव्व पावया, सव्व लोअ हिय मूल पावया । संथुआ अजिअ सन्ति पायया, हुँतं मे सिव सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ (अपरान्तिका) ॥ एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअ संति-

जिण जुयलं । ववगय कम्म रय मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ (गाहा) ॥ तं बहु गुणप्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं । नासेउमे विसायं, कुणउ अ परिसाविअ पसायं ॥ ३६ ॥ (गाहा) तं मोएउ अ णंदिं, पावेउ अणंदिसेणमभिनंदिं । परिसाविअ सुह-णंदिं, मम य दिसउ संजमे णंदिं ॥ ३७ ॥ (गाहा) ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, संवच्छरिए अ अवस्स भणिअव्वो । सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग णिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढ़इ जो अ णिसुणइ, उभओ कालं पि अजिय संति थयं । णहु हुन्ति तस्स रोगा, पुव्वुप्पण्णा विणासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम पयं, अहवा कित्ति सुवित्थडां भुवणे । ता तेलुक्कुद्ध-रणे, जिण वयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

इति श्रीवृहदजित शान्ति स्तवनं प्रथमं स्मरणम् ॥

---

(२)

॥ अथ द्वितीयं लघु अजितशान्ति स्मरणम् ॥

उल्लासि क्कम णक्खण णिग्गय पहा दण्डच्छ लेणंगिणं, वंदारूण दिसंतइव्व पयडं णिव्वाण मग्गावलि । कुन्दिन्दुज्जल दन्त कन्ति मिसओ णीहन्त णाणं कुरुकेरे दोवि दुइज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहि णीरं जोम णिज्जंजलीहिं, खय समय समीरं जो जणिज्जा गईए। सयल णहयलं वा लंघए जो पएहिं, अजिअ महव संतिं सो समत्थो थुणेऊ ॥ २ ॥ तहवि हु बहु माणुल्लास भत्तिब्भरेण, गुण कणमवि कित्तेहामि चिन्तामणि व्व । अलमहव अचिन्ताणन्त सामत्थ ओसिं फलि हइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सयल जय हिआणं णाम मित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठाणिट्ठ दोघट्ठ थट्टं । णमिर सुर किरीडुग्घिट्ठ पायारविन्दे, सययमजिअ सन्ती ते जिणन्दे

भिवन्दे ॥ ४ ॥ पसरइ वर कित्ती वड्ढए देह-
दित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ।
फुरइ परम तित्ती होइ संसार छित्ती, जिण
जुअ पय भत्ती हीय चिंतोरु सत्ती ॥ ५ ॥ ललिय
पय पयारं भूरि दिव्वंग हारं, फुड गण रस
भावोदार सिंगार सारं । अणिमिस रमणिज्जं
दंसणच्छेअ भीया, इव पुण मणिबंधा कास
णट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअ संती ते कया-
सेस संती, कणय रय पसंगा छज्जए जाणि
मुत्ती । सरभस परिरंभा रंभि णिव्वाण लच्छी,
घण थण घुसिणिक्कुप्पंक पिंगीकयव्व ॥ ७ ॥
बहु विह णय भंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं, सदस-
दणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं । इय कुणय विरुद्धं
सुप्पसिद्धं च जेसिं, वयणमवयणिज्जं ते जिणे
संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिय लोए ताव मोहंध-
यारं, भमइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त छण्णं ।
फुरइ फुड फलंताणंत णाणंसुपूरो, पयडमजिअ

संतिज्झाण सूरो ण जाव ॥ ९ ॥ अरि करि हरि तिण्हुण्हंबु चोराहि वाहि, समर डमर मारी रुद्द खुद्दोवसग्गा । पलयमजिअ संती कित्तणे झत्ति जंती, णिविडतर तमोहा भक्खरालुंखि अव्व ॥ १० ॥ णिच्चिअ दुरिअ दारू दित्त झाणग्गि जाला परिगयमिव गोरं, चिंतिअं झाण रूवं । कणय णिहस रेहा कंति चोरं करिज्जा, चिर थिर मिहलच्छिं गाढ संथंभि अव्व ॥ ११ ॥ अडवि णिवडियाणं पत्थिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरंताण गुत्ति ट्ठियाणं । जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संतिणाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिण्णं पक्क पाइक्क पुण्णं, सयल पुहवि रज्जं छड्डिअं आण-सज्जं । तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्ति मग्गं, चरण मणुपवण्णा हुंतु ते मे पसण्णा ॥ १३ ॥ छण ससि वयणाहि फुल्ल णित्तुप्पलाहिं, थण भर णमिरीहिं मुट्ठि गिज्जोदरीहिं । ललिअ भुअ-

ल्याहिं पीण सोणित्थणीहिं, सय सुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिसक्किडिभ कुट्ठगंठि कासाइ सार, खय जर वण लूआ-सास सोसोदराणि । णह मुह दसणच्छि कुच्छि कण्णाइ रोगे, मह जिण जुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरु दुह तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुग थुत्तं वच्छरे वा पवित्तं । पढ़ह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण घाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजिअ सत्तु पुत्त ! सिरि अजिअ जिणे-सर ! तह अइरा विस सेण तणय ! पंचम चक्कीसर ! तित्थंकर सोलसम ! संति ! जिणवल्लह संथुअ ! कुरु मंगल मवहरसु दुरिय मखिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥

इति श्रीलघु-अजित-शान्ति-स्तवनं द्वितीयं स्मरणम्

---

(३)

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअं मुणिणो। चलण जुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण णह मुह णिबुड्ड णासा विवण्णलावण्णा। कुट्ठ महा रोगाणल, फुलिंग णिद्दड्ड सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेअ वुड्ढिअ च्छाया। वण दव दड्ढा गिरि पाय यव्व पत्ता पुणोलच्छिं ॥ ३ ॥ दुव्वाय खुभिय जलणिहि, उब्भड कल्लोल भीसणारावे। संभंत भय विसंठुल, णिज्जामय मुक्कवावारे ॥४॥ अवि-दलिय जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं। पास जिण चलणजुअलं, णिच्चं च्चिअ जे णमंति णरा ॥ ५ ॥ खर पवणु द्धूय वणदव, जालावलि मिलिय सयल दुम गहणे। डज्झंत मुद्धमिय वहु, भीसण रव भीसणम्मि वणे ॥ ६ ॥

जग गुरुणो कम जुअलं, णिव्वविय सयल तिहु-
अणाभोअं । जे संभरंति मणुआ, ण कुणइ
जलणो भयं तेसिं ॥७॥ विलसंत भोग भीसण
फुरिआरुण णयण तरल जीहालं । उग्ग-
भुअंगं णव जलय, सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥
मण्णंति कीडसरिसं, दूर परिच्छूढ विसम विस-
वेगा । तुह णामक्खर फुड सिद्ध, मंत गुरुआ
नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, फुलिंद
सद्दूल सद्द भीमासु । भय विहुर वुण्ण कायर,
उल्लूरिअ पहिअ सत्थासु ॥१०॥ अविलुत्त विहव-
सारा, तुह नाह ! पणाम मत्त वावारा । ववगय
विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥
पज्जलि आणल समणं, दूर विआरिय मुहं महा-
कायं । णह कुलिस घाय विअलिअ गइंद कुंभत्थ
लाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभम पत्थिव णह
मणि माणिक्क पडिअ पडिमस्स । तुह वयण पहर-
, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि-

धवलदंत मुसलं, दीह करुल्लाल वड्ढि उच्छाहं । महु पिंग णयण जुअलं, ससलिलणव जलहरारावं ॥१४॥ भीमं महा गइंदं, अच्चासण्णंपि ते णवि गणंति । जं तुम्ह चलणजुअलं मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥१५॥ समरम्मि तिक्ख-खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कवंधे । कुंत विणिभिण्ण करि कलह, मुक्क सिक्कार पउरम्मि ॥१६॥ णिज्जिय दप्पुद्धररिउ, णरिंद णिवहा भडा जसं धवलं । पावंति पाव पसमिण ! पास जिण ! तुह प्पभावेण ॥१७॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण भयाइं । पास जिणणाम संकित्तणेण, पसमंति सव्वाइं ॥१८॥ एव महाभयहरं, पास जिणिंदस्स संथव-मुआरं । भविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपर णिहाणं ॥१९॥ राय भय जक्ख रक्खस, कुसुमिण दुस्सउण रिक्ख पीडासु । संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥ जो पढ़इ जो अ णिसुणइ, ताणं कइणो य माण-तुँगस्स । पासो

पावं पसमेउ, सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥२१॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयं स्मरणम् ॥

(४)

अथ गणधरदेव-स्तुतिरूपं चतुर्थं स्मरणम्

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्मं पवत्तियं भव्व, सत्त संताण सुह जणयं ॥१॥ णासिय सयल किलेसा, णिहय कुलेसा पसत्थ सुह लेसा । सिरि वद्धमाण तित्थस्स, मंगलं दितु ते अरिहा ॥२॥ णिद्दड्ढ कम्म बीआ, बीआ परमेट्ठिणो गुण समिद्धा । सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥३॥ आयारमायरंता, पंच पयारं सया पयासंता । आयरिआ तह तित्थं, णिहय कुतित्थं पयासंतु ॥४॥ सम्म सुअ वायगा वायगाय, सिअवाय वायगा वाए । पवयण पडणीय कए, वण्णंतु सव्वस्स संघस्स ॥५॥ णिव्वाण साहणुज्जय, साहूणं जणिय सव्व साहज्जा । तित्थप्पभावगा ते, हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥६॥ जेणाणुगयं

णाणं, णिव्वाण फलं च चरणमवि हवई । तित्थस्स दंसणं तं, मंगुलमवणेउ सिद्धियरं ॥७॥ णिच्छम्मो सुअधम्मो, समग्ग भव्वंगि वग्ग कय सम्मो । गुण सुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥८॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ भव्व सत्त सिव सम्मो । णिसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥९॥ गुण गण गुरुणो गुरुणो, सिव सुह मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि वद्धमाण पहु पय, डिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥१०॥ जिय पडिवक्खा जक्खा, गोमुह मायंग गयमुह पमुक्खा । सिरि बंभ संति सहिआ, कय णय रक्खा सिवं दिंतु ॥११॥ अंबा पडिहय डिंबा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स । चक्केसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥१२॥ सोलस विज्जा देवीउ, दिंतु संघस्स मंगलं विउलं । अच्छुत्ता सहिआओ, विस्सुअ सुयदेवयाइ समं ॥१३॥ जिणसासण कय रक्खा, जक्खा चउवीस सासण सुरावि ! सुहभावा संतावं,

तित्थस्स सया पणासंतु ॥१४॥ जिण पवयणम्मि णिरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे । वेआवच्च-कराविं अ, तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥१५॥ जिण समय सिद्ध सुमग्ग, वहिय भव्वाण जणिय साह-ज्जो । गीयरई गीअजसो सपरिवारो सुहं दिसउ ॥१६॥ गिहि गुत्त खित्त जल थल, वण पव्वय-वासी देव देवीउ । जिण सासणट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि णिहणंतु ॥१७॥ दस दिसिपाला सक्खि-त्तपालया, णवग्गहा स णक्खत्ता । जोइजि राहु ग्गह, काल पास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥१८॥ सह-काल कंटएहिं, सव्विट्ठि वच्छेहिं कालवेलाहिं । सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥१९॥ भवणवई वाणमंतर, जोइस वेमा णिआ य जे देवा । धरणिंद सक्का सहिआ, दलंतु दुरियाइं तित्थस्स ॥२०॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणा सिय तमोहं । तंतित्थस्स भगवओ, णमो णमो वद्धमाणस्स ॥२१॥ सो जयउ जिणो वीरो,

जस्सज्ज वि सासणं जए जयइ । सिद्धि पह सासणं, कुपह णासणं सव्व भय महणं ॥२२॥ सिरि उसभसेण पमुहा, हय भय णिवहा दिसंतु तित्थस्स । सव्व जिणाणं गणहा, रिणोऽणहं वंछियं सव्वं ॥२३॥ सिरि वद्धमाण तित्था, हिवेण तित्थं समप्पियं जस्स । सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥२४॥ पयईए भद्दिया जे, भद्दाणि दिसंतु सयल संघस्स । इयर सुरा वि हु सम्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥२५॥ इय जो पढ़इ तिसंज्झं, दुस्सज्झं तस्स णत्थि किंपिजए । जिण-दत्ता णाय ट्ठिओ, सुणिट्ठि अट्ठो सुही होई ॥२६॥

इति श्रीगणधर-देवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणम् ।

(५)

॥ अथ गुरुपारतन्त्र्यनामकं पञ्चमं स्मरणम् ॥

मय रहियं गुण गण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं । सुगुरु जण पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥१॥ णिम्म हिय मोह जोहा,

णिहय विरोहा पणट्ठ संदेहा । पणयंगि वग्ग दाविअ सुह संदोहा सगुण गेहा ॥२॥ पत्त सुजइत्त सोहा, समत्त पर तित्थ जणिय संखोहा । पडिभग्ग मोह जोहा, दंसिय सुमहत्थ सत्थोहा ॥३॥ परिहरिअ सत्त वाहा, हय दुह दाहा सिवंब तरु साहा । संपाविअ सुह लाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥४॥ सुगुण जण जणिय पुज्जा, सज्जो णिरवज्ज गहिय पवज्जा । सिव सुह साहण सज्जा, भव गिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥५॥ अज्ज सुहम्म प्पमुहा, गुण गण णिवहा सुँरिंद विहिअ महा । ताण तिसंझं णामं, णामं ण पणासइ जियाणं ॥६॥ पडिवज्जिअ जिणदेवो, देवायरिओ दुरंत भवहारी । सिरिणेमि चंद सूरी, उज्जोअण सूरिणो सुगुरु ॥७॥ सिरि वद्धमाण सूरी, पयडीकय सूरि मंत माहप्पो । पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुद्ध जणओ ॥८॥ सुह सील चोर चप्परण, पच्चलो णिच्चलो जिण मयम्मि । जुगपवर

सुद्ध सिद्धंत, जाणओ पणय सुगुणजणो ॥९॥ पुरओ दुल्लह महिवल्लहस्स, अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्कावि आरि ऊणं, सीहेणव दव्वलिंगि गया ॥१०॥ दसमच्छरेय णिसि विप्फुरंत, सच्छंद सूरि मय तिमिरं । सूरेणव सूरिजिणे, सरेण हय महिय दोसेणं ॥११॥ सुकइत्त पत्त कित्ती, पयडिअ गुत्ती पसंत सुह मुत्ती । पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद जईसरो मंती ॥१२॥ पयडिअ णवंग सुत्तत्थ, रयणकोसो पणासिअ पओसो । भव भीय भविअ जण मण, कय संतोषो विगय दोसो ॥१३॥ जुग-पवरागम सार, प्परूवणा करण बंधुरो धणिअं । सिरी अभयदेवसूरी, मुणि पवरा परम पसम धरो ॥१४॥ कय सावय सत्तासो, हरिव्व सारंग भग्ग संदेहो । गय समय दप्प दलणो, आसाइअ पवर कव्व रसो ॥१५॥ भीम भवकाणणम्मि अ, दंसिअ गुरु वयण रयण संदोहो । णीसेस सत्त गुरुओ, सूरी जिणव-ल्लहो जयइ ॥१६॥ उवरिट्ठिअ सच्चरणो, चउरणु

ओगप्पहाण संचरणो । असम मयराय महणो, उड्ढ मुहो सहइ जस्स करो ॥१७॥ दंसिअ णिम्मल णिच्चल, दंत गणो गणि अ सावउत्थ-भओ । गुरु गिरि गुरुओ, सरहुव्व सूरी जिणव-ल्लहो होत्था ॥१८॥ जुग पवरागम पीउस, पाण पीणिय मणा कया भव्वा । जेण जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥१९॥ विप्फुरिय पवर पवयण, सिरोमणी वूढ दुव्वह खमोय । जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताणकरो ॥२०॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरुणं पारतंतमुव्वहइ । जयइ जिणदत्त सूरी, सिरि णिलओ पणय मुणि तिलओ ॥२१॥

इति श्रीगुरुपारतन्त्र्य-नामकं पञ्चमं स्मरणम् ।

(६)

॥ अथ षष्ठं "सिग्घमवहरउ" स्मरणम् ॥

सिग्घमवहरउ विग्घं, जिण वीराणाणुगामि संघस्स । सिरि पास जिणो थंभण, पुरट्ठिओ

णिट्ठिआणिट्ठो ॥१॥ गोयम सुहम्म पमुहा, गणव-इणो विहिअ भव्व मत्त सुहा। सिरि वद्धमाण जिण तित्थ, सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥२॥ सक्काइणो सुरा जे, जिण वेयावच्च कारिणो संति। अव हरिय विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संतिकरा ॥३॥ सिरि थंभणयट्ठिय पास सामि, पय पउम पणय पाणीणं। णिद्दलिय दुरिय विंदो, धरणिंदो हरउ दुरियाइं ॥४॥ गोमुह पमुक्ख जक्खा, पडिहय पडिपक्ख पक्खलक्खा ते। कय सगुण संघरक्खा, हवंतु संपत्त सिव सुक्खा ॥५॥ अप्पडिचक्का पमुहा, जिण सासण देवया य जण पणया। सिद्धाइया समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥६॥ सक्काएसा सच्चउर. पुरट्ठिओ वद्धमाण जिण-भत्तो। सिरि बंभ संति जक्खो, रक्खउ संघं पय-त्तेण ॥७॥ खित्त गिह गुत्त संताण, देस देवाहि-देवया ताओ। णिव्वुइ पुर पहिआणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥८॥ चक्केसरि चक्कधरा

विहिपह रिउ च्छिण्ण कंधरा धणियं । सिव सरण लग्ग संघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥९॥ तित्थ-वइ वद्धमाणो, जिणेसरो संगओ सुसंघेण । जिण-चंदो भय देवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहुमं ॥१०॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरोव्व हय तिमिरो । जिणचंदाऽभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥११॥ गुरु जिणवल्लह पाए, अभयदेव पहुत्त दायगे वंदे । जिणचंद जिणेसर, वद्धमाण तित्थस्स बुड्ढिकए ॥१२॥ जिणदत्ताणंसम्मं, मण्णंति कुणंति जे य कारिंति । मणसावयसाव-उसा, जयंतु साहम्मिआ ते वि ॥१३॥ जिणदत्त-गुणे णाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति । दंसिअ सिअ वाय पए, णमामि साहम्मिआ ते वि ॥१४॥

इति षष्ठं स्मरणम् ॥६॥

(७)

॥ अथ उवसग्गहर-नामकं सप्तमं स्मरणम् ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म घणमु-

क्कं । विसहर विस णिण्णासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्सग्गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ । णर तिरिएसुवि जीवा, पावंति ण दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मते लद्धे, चिंतामणि कप्पपाय वब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर णिब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

इति श्रीपार्श्वजिन-स्तवनं सप्तमं स्मरणम् ॥७॥

समाप्तानि सप्त स्मरणानि ।

(१)

॥ अथ श्रीभक्तामर स्तोत्रम् ॥

भक्तामर प्रणत मौलि मणि प्रभाणा, मुद्योतकं दलित पापतमो वितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिन

पादयुगं युगादा, वालम्बनं भवजले पततां जना-
नाम् ॥१॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मय तत्त्वबोधा,
दुद्भूत बुद्धि पटुभिः सुरलोक नाथैः । स्तोत्रैर्जगत्
त्रितयचित्त हरै रुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं
प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ युग्मम् ॥ बुद्ध्या विनाऽपि
विबुधार्चित पाद पीठ, स्तोतुं समुद्यत मतिर्विगत
त्रपोऽहम् । बालं विहाय जल संस्थितमिन्दु बिम्ब,
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥
वक्तुँ गुणान् गुण समुद्र शशाङ्क कान्तान्, कस्ते
क्षमः सुरगुरु प्रतिमोऽपि बुद्ध्या । कल्पान्त काल
पवनोद्धत नक्र चक्रं, को वा तरीतु मलमम्बु निधिं
भुजाभ्याम् ॥४॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मु-
नीश, कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्याऽऽत्म वीर्य मविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति
किं निज शिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥ अल्पश्रुतं
श्रुतवतां परिहास धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते
म् । यत् कोकिलः किलमधौ मधुरं विरौति

तच्चारु चाम्र कलिका निकरैक हेतुः ॥६॥ त्वत संस्तवेन भव सन्तति मन्निबद्धं, पापं क्षणात क्षय-मुपैति शरीर भाजाम् । आक्रान्त लोक मलि नील मशेषमाशु, सूर्यांशु भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥७॥ मत्वेतिनाथ ! तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात । चेतो हरिष्यति सतां नलिनी दलेषु, मुक्ताफल द्युतिमुपैति ननूद बिन्दुः ॥८॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त दोषं, त्वत्सं-कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्र किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विका-शभाञ्जि ॥९॥ नात्यद्भुतं भुवन भूषण ! भूत-नाथ ! भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः । तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म सम करोति ॥१०॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष विलोकनीयं, नान्यत्र तोष मुपयाति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः शशि कर द्युति दुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुँ क इच्छेत् ॥११॥ यैः

शान्तराग रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रि-
भुवनैक ललाम भूत । तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः
पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूप मस्ति ॥१२॥
वक्त्रं क्व ते सुर नरोरग नेत्र हारि, निःशेष
निर्ज्जित जगत्त्रितयोपमानम् । बिम्बं कलङ्क
मलिनं क्व निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डु-
पलाश कल्पम् ॥१३॥ सम्पूर्ण मंडल शशाङ्क
कलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रि जगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवार-
यति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥१४॥ चित्रं किमत्र यदि
ते त्रिदशाङ्गनाभि, नीतं मनागपि मनो न विकार
मार्गम् । कल्पान्त काल मरुता चलिता चलेन,
किं मन्दराद्रि शिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥
निर्धूमवर्ति रपवर्ज्जित तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रय-
मिदं प्रकटी करोषि । गम्यो न जातु मरुतां
चलिता चलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जग-
[illegible]ः ॥१६॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु

गम्यः, स्पष्टी करोषि सहसा युगपज्जगन्ति। नाम्भोधरोदर निरुद्ध महाप्रवाहः, सूर्याऽतिशायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥ नित्योदयं दलित मोह महान्धकारं, गम्यं न राहु वदनस्य न वारिदानम्। विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प कान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्क बिम्बम् ॥१८॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दु दलितेषु तमस्सुनाथ। निष्पन्न शालि वन शालिनि जीव लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल भार नम्रैः ॥१९॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृताव-काशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु। तेज स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं, नैवं तु काच शकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥ मन्ये वरं हरि हरा-दय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति। किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि ॥२१॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं

जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र रश्मि, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु जालम् ॥२२॥ त्वामा मनन्ति मुनयः परमं पुमांस, मादित्य वर्नममलं तमसः परस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युँ, नान्यः शिवः शिव पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्य-मसङ्ख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्ग केतुम् । योगीश्वरं विदि-तयोगमनेक-मेकं, ज्ञान स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित बुद्धि बोधात्, त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रय शंकरत्वात् । धाताऽसि धीर शिवमार्ग विधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुव-नार्त्तिहराय नाथ ! तुभ्यं नमः क्षितितला मल भूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रि जगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि शोषणाय ॥२६॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! दोषै रुपात्त विबुधाश्रय

जात गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिद पीक्षितोऽसि ॥२७॥ उच्चैर शोक तरु संश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त तमो वितानं, बिम्बं रवेरिव पयोधर पार्श्व वर्त्ति ॥२८॥ सिंहासने मणि मयूख शिखा विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् । बिम्बं वियद्विलसदंशु लता वितानं, तुङ्गो दयाद्रि शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥ कुन्दावदात चलचामर चारु शोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौत कान्तम् । उद्यच्छशांक शुचि निर्झर वारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शान्त कौम्भम् ॥३०॥ छत्र त्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त, मुच्चैः स्थितं स्थगित भानु कर प्रतापम् । मुक्ताफल प्रकर जाल विवृद्धशोभं, प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥ उन्निद्र हेम नव पङ्कज पुञ्जकान्ति, पर्युल्लसन्नख मयूख शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३२॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र ! धर्मोपदेशन विधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो ग्रह गणस्य विकाशिनोऽपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविल विलोल कपोल मूल, मत्त भ्रमद् भ्रमरनाद विवृद्ध कोपम् । ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा श्रितानाम् ॥३४॥ भिन्नेभ कुम्भ गलदुज्ज्वल शोणिताक्त, मुक्ताफल प्रकर भूषित भूमिभागः । बद्धक्रमः क्रम गतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रम युगाचल संश्रितं ते ॥३५॥ कल्पान्त काल पवनोद्धत वह्नि कल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् । विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं, त्वन्नाम कीर्त्तन जलं शमयत्यशेषम् ॥३६॥ रक्तेक्षणं समद कोकिल कण्ठ नीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फण मापतन्तम् । आक्रामति क्रम युगेन निरस्त शङ्क, स्त्वन्नाम नाग दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥ वल्गत्तुरङ्ग गज गर्जित भीम

नाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् । उद्य-
द्दिवाकर मयूख शिखा पविद्धं त्वत्कीर्त्तनात् तम
इवाशुभिदामुपैति ॥३८॥ कुन्ताग्र भिन्न गज
शोणित-वारिवाह, वेगावतार तरणातुरयोध भीमे ।
युद्धे जयं विजित दुर्ज्जय जेय पक्षा, स्त्वत्पाद
पङ्कज वनाश्रयिणो लभन्ते ॥३९॥ अम्भोनिधौ
क्षुभितभीषण नक्र चक्र, पाठीन पीठ भयदोल्वण
वाडवाग्नौ । रङ्गत्तरङ्ग शिखर स्थित यान पात्रा,
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४०॥ उद्-
भूत भीषण जलोदर भार भुग्नाः, शोच्यां दशामुप-
गताश्च्युत जीविताशाः । त्वत्पादपङ्कज रजोऽमृत
दिग्धदेहा, मर्त्त्या भवन्ति मकरध्वज तुल्य
रूपाः ॥४१॥ आपाद कण्ठमुरु शृङ्खल वेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगड कोटि निघृष्ट जङ्घाः । त्वन्नाम-
मन्त्र मनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत
बन्धभया भवन्ति ॥४२॥ मत्त द्विपेन्द्र मृगराज
दवानलाहि, संग्राम वारिधि महोदर बन्धनोत्थम् ।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्र स्त्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिर वर्ण विचित्र पुष्पाम्। धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मान तुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥

॥ इति श्रीभक्तामरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(२)

॥ अथ वृद्ध शान्तिः ॥

भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं, प्रस्तुतं सर्व मेतद्। ये यात्रायां त्रिभुवनगुरो, रार्हतां भक्ति भाजः ॥ तेषां शान्तिर्भवतु भवता मर्हदादि प्रभावा। दारोग्य श्री धृतिमति करी क्लेश विध्वंस हेतुः ॥१॥

भो भो भव्यलोका ! इहहि भरतैरावतविदेह-सम्भावनां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन प्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टा चालनान्तरं सकल सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सवि-

नयमर्हद् भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकादिश्रृङ्गे विहित जन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा "महाजनो येन गतः स पन्थाः" इति भव्य जनैः सह समागत्य स्नात्र पीठे स्नात्रं विधाय शान्ति मुद्घोषयामि, तत्पूजा-यात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां, स्वाहा ।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन स्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकपूज्या स्त्रिलोकेश्वरा स्त्रिलोकोद्योतकराः ।

ॐ श्री केवलज्ञानि, निर्वाणि, सागर, महा-यश, विमल,सर्वानुभूति, श्रीधर, दत्त दामोदर,सुतेजः, स्वामि, मुनिसुव्रत, सुमति, शिवगति, अस्ताग, नमीश्वर, अनिल, यशोधर, कृतार्थ, जिनेश्वर, शुद्धमति, शिवकर, स्यन्दन, सम्प्रति, एते अतीत चतुर्विंशति तीर्थङ्कराः ।

ॐ श्री ऋषभ, अजित, सम्भव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व, वर्द्धमान, एते वर्तमान जिनाः ।

ॐ श्री पद्मनाभ, शूरदेव, सुपार्श्व, स्वयंप्रभ, सर्वानुभूति, देवश्रुत, उदय, पेढ़ाल, पोटिल, शतकीर्त्ति, सुव्रत, अमम, निष्कषाय, निष्पुलाक, निर्मम, चित्रगुप्त, समाधि, सम्वर, यशोधर, विजय, मल्लि, देव, अनन्तवीर्य्य, भद्रङ्कर, एते भावि तीर्थंकराः जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजय दुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा । ॐ श्री नाभि, जितशत्रु, जितारि, सम्वर, मेघ, धर, प्रतिष्ठ, महसेन, सुग्रीव, दृढ़रथ, विष्णु, वासुपूज्य, कृतवर्म, सिंहसेन, भानु, विश्वसेन, सूर, सुदर्शन, कुम्भ, सुमित्र, , समुद्र विजय, अश्वसेन, सिद्धार्थ, इति वर्त-

मान चतुर्विंशति जिन जिनकाः ।

ॐ श्री मरुदेवी, विजया, सेना, सिद्धार्था, सुमङ्गला, सुसीमा, पृथिवी माता, लक्ष्मणा, रामा, नन्दा, विष्णु, जया, श्यामा, सुयशा, सुव्रता, अचिरा, श्री, देवी, प्रभावति, पद्मा, वप्रा, शिवा, वामा, त्रिशला, इति वर्तमान जिन जनन्यः।

ॐ श्री गोमुख, महायक्ष, त्रिमुख, यक्षनायक, तुम्बरु,कुसुम, मातङ्ग,विजय, अजित, ब्रह्मा,यक्षराज, कुमार, षण्मुख, पाताल, किन्नर, गरुड़, गन्धर्व, यक्षराज, कुबेर, वरुण, भृकुटि, गोमेध, पार्श्व, ब्रह्म-शान्ति, इति वर्त्तमान जिन यक्षः ।

ॐ चक्रेश्वरी, अजितबला, दुरितारी, काली, महाकाली,श्यामा,शान्ता, भृकुटि, सुतारका,अशोका, मानवी, चण्डा, विदिता, अंकुशा, कन्दर्पा,निर्वाणी, बला,धारिणी,धरणप्रिया,नरदत्ता,गान्धारी,अम्बिका, पद्मावती, सिद्धायिका, इति वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर शासन देव्याः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति मति कीर्त्ति कान्ति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेश निवेशनेषु सुग्रीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः ।

ॐ रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रश्रृङ्खला, वज्रांकुशा, अप्रतिचक्रा, पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गान्धारी, सर्वास्त्रमहाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अच्छुप्ता, मानसी, महामानसी, एता षोड़श विद्या देव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा ।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।

ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारक बुद्ध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोक पालाः सोम यम बरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायका ये चान्येऽपि ग्राम नगर क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीण कोष कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ।

ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत स्वजन सम्बन्धि बन्धुवर्ग सहिता नित्यं चामोद प्रमोद कारिणः । अस्मिश्च भूमण्डलेआयतन निवासिनां साधु-साध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दुःख दुर्भिक्ष दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ।

ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि माङ्गल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।

श्रीमते शान्तिनाथाय नमः शान्ति विधायिने। त्रैलोकस्यामराधीश मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥१॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥२॥ ॐ उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट ग्रह गति, दुःस्वप्न दुर्निमित्तादि । सम्पादित हित सम्पन्नाम ग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥ श्रीसंघ जगज्जनपद, राजाधिपराजसन्निवेशानाम् । गोष्ठिक पुर मुख्याणां व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥४॥

श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । श्री पौरलोकस्य शान्तिर्भवतु । श्रा जनपदानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु । श्री राजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु । श्री गोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु श्री पौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु । श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु । ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ।

एषा शान्ति प्रतिष्ठा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु शान्ति कलशं गृहीत्वा कुङ्कुम चन्दन कर्पूरागुरु-धूपवास कुसुमाञ्जलि समेतः स्नात्र पीठे श्री संघसमेतः शुचि शुचिवपुः पुष्पवस्त्र चन्दनाभरणाऽलंकृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ।

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, । जे हि जिनाभिषेके ॥१॥ अहं तित्थय-

रमाया, सिवादेवी तुम्ह णयर निवासिणी अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु ॥२॥ शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगुणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः ॥३॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्न वल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥

॥ इति वृद्ध-शान्तिः समाप्ता ॥

(३)

अथ जिनपञ्जर स्तोत्रम्

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंआचार्येभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतम स्वामी प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नमः ॥१॥ एष पञ्चनमस्कारः, सर्व पाप क्षयंकरः । मङ्गलाणां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं

जये विजये अर्हं परमात्मने नमः । कमल प्रभ सूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥३॥ एक भक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥४॥ भूशय्या ब्रह्मचर्य्येण, क्रोध लोभ विवर्जितः । देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥५॥ अर्हन्तं स्थापयेद् मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ल्ललाटके । आचार्यं श्रोतयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥६॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च । सूर्य चन्द्र निरोधेन, सुधीः सर्वार्थ सिद्धये ॥७॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वाम पार्श्वे स्थितो जिनः । अङ्ग संधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥८॥ पूर्वाशां श्री जिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः । दक्षिणाशां परब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥९॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः । उत्तरां तीर्थकृत् सर्वामिशाने च निरञ्जनः ॥१०॥ पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणी प्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं

कुलम् ॥११॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोऽपि विलोचने । संभवः कर्णयुगलं, नासिका चाभि-नन्दनः ॥१२॥ ओष्ठौ श्री सुमति रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभुः । जिह्वा सुपार्श्व देवोऽयं तालु चन्द्र प्रभाभिधः ॥१३॥ कंठं श्री सुविधि रक्षेद् हृदयं च श्री शीतलः । श्रेयांसो बाहु युगलं, वासुपूज्य कर द्वयम् ॥१४॥ अंगुलीर्विमलो रक्षेद्, अनन्तोऽसौ स्तनावपि । सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्री शांतिर्नाभि-मण्डलम् ॥१५॥ श्री कुन्थुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोम कटी तटम् । मल्लिरू रु पृष्ठ वंशं, जङ्घे च मुनिसुव्रतः ॥१६॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्री नेमिश्चरण द्वयम् श्री पार्श्वनाथ सर्वाङ्ग, वर्द्धमान-श्चिदात्मकम् ॥१७॥ पृथ्वी जल तेजस्क, वाय्वा-काश मयं जगत् । रक्षेदशेष पापेभ्यो, वीतरागो निरञ्जनः ॥१८॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रु संकटे । व्याघ्र चौराग्नि सर्पादि, भूत प्रेत भया-श्रिते ॥१९॥ अकाल मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समा-

श्रिते । अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोग पीड़िते ॥२०॥ डाकिनी शाकिनी ग्रस्ते, महाग्रह गणार्दिते । नद्यु-त्तारेऽध्व वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥२१॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरम् । तस्य किंचिद् भयं नास्ति, लभते सुख सम्पदम् ॥२२॥ जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासरम् । कमल प्रभ राजेन्द्र, श्रियं स लभते नरः ॥२३॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्र मेतज्जिनपञ्जराख्यम् । आसादयेत् श्रीकमल प्रभाख्यं, लक्ष्मी मनोवाञ्छित पूरणाय ॥२४॥ श्री रुद्रपल्लीय वादीन्द्र गच्छे, देव-प्रभाचार्य पदाब्ज हंसः । वादीन्द्र चूड़ामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरु श्रीकमल प्रभाख्यः ॥२५॥

॥ इति श्री जिनपञ्जर स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(४)

अथ श्रीऋषिमंडल-स्तोत्रम्

आद्यन्ताक्षर संलक्ष्य, मक्षरं व्याप्य यत् स्थि-तम् । अग्निज्वाला समं नादं, बिन्दु रेखा समन्वि-

तम् ॥१॥ अग्निज्वाला सामाक्रान्तं, मनो मल विशो-
धकम् । देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्म-
लम् ॥२॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥३॥
ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः ।
ॐ नमः सर्व सूरिभ्य, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥४॥
ॐ नमो सर्व साधुभ्य, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नमः ।
ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्य-श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥५॥
श्रेयसेऽस्तु श्रियेऽस्त्वेत, दर्हदाद्यष्टकं शुभम् । स्था-
नेष्वष्टसु विन्यस्ततं, पृथग्बीजसमन्वितम् ॥६॥ आद्यं
पदं शिखां रक्षेत, परं रक्षतु मस्तकम् । तृतीयं रक्ष-
नेत्रे द्वे, तूर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥७॥ पञ्चमं तु मुखं
रक्षेत् षष्ठं रक्षेतु घण्टिकाम् । नाभ्यन्तं सप्तमं रक्षेद्,
रक्षेत् पादान्तमष्टमम् ॥८॥ पूर्वं प्रणवतः सान्तः
सरेफो द्व्यब्धिपञ्चषान् । सप्ताष्टदशासूर्याङ्कान् श्रितो
बिन्दु स्वरान् पृथक् ॥९॥ पूज्य नामाक्षरा आद्याः,
पश्चातो ज्ञानदर्शन । चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं

सान्तसमलंकृतः ॥१०॥ ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं-ह्रौं ह्रः, आसिआउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो नमः। जम्बूवृक्ष धरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्ट काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥११॥ तन्मध्ये-सङ्गतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः। उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, तारामण्डलमण्डितः ॥१२॥ तस्योपरि सकारान्तं, बीज मध्यस्य सर्वगम्। नमामि बिम्ब मार्हन्त्यम् ललाटस्थं निरञ्जनम् ॥१३॥ अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जाड्य तोज्झितम्। निरीहं निरहङ्कारं, सारं सारतरं घनम् ॥१४॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्विकं राजसं मतम्। तामसं चिरसम्बुद्धं, तेजसं शर्वरी समम् ॥१५॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम्। परापरं परातीतं, परम्परपरा-परम्। ॥१६॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तूर्यवर्ण-कम्। पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं चपरापरं॥१७॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्भृतं भ्रान्तिवर्जितम्। निरञ्जनं निराकारं, निर्लेपं वीत संश्रयम् ॥१८॥

ईश्वरं ब्रह्म सम्बुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरुम् । ज्योति रुपं महादेवं, लोकालोक प्रकाशकम् ॥१९॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः, सरेफो बिन्दुमण्डितः । तूर्य स्वर समायुक्तो, बहुधा नाद मालितः ॥२०॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, ऋषभाद्या जिनोत्तमाः । वर्णै र्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र सङ्गताः ॥२१॥ नादश्चन्द्र समाकारो, बिन्दुर्नील समप्रभः । कलारुण समासान्तः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥२२॥ शिरः संलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः । वर्णानुसार संलीनं, तीर्थकृन्मण्डलंस्तुमः ॥२३॥ चन्द्रप्रभ पुष्पदन्तौ, नादस्थिति समाश्रितौ । बिन्दुमध्यगतौ नेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥२४॥ पद्म प्रभ वासुपूज्यौ, कलापदमधिश्रितौ । शिरसि स्थिति संलीनौ, पार्श्वमल्ली जिनेश्वरौ ॥२५॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥२६॥ गत राग द्वेष मोहाः, सर्व पाप विवर्जिताः । सर्वदा सर्व कालेषु, ते भवन्तु

जिनोत्तमाः ॥२७॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादित सर्वाङ्गं, मा मां हिंसन्तु डाकिनी ॥२८॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां निघ्नन्तु राकिनी ॥२९॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां निघ्नन्तु लाकिनी ॥३०॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां हिंसन्तु काकिनी ॥३१॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां हिंसन्तु शाकिनी ॥३२॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां निघ्नन्तु हाकिनी ॥३३॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां निघ्नन्तु याकिनी ॥३४॥ देवदेवस्य यच्चक्रं० मा मां हिंसन्तु पन्नगाः ॥३५॥ देव देव य० मा मां हिंसन्तु हस्तिनः ॥३६॥ देवदे० य० मा मां निघ्नन्तु राक्षसाः ॥३७॥ देवदे० य० मा मां निघ्नन्तु वह्नयः॥३८॥ देव दे० य० मा मां हिंसंतु सिंहकाः ॥३९॥ देव दे० य० मा मां निघ्नन्तु दुर्ज्जनाः॥४०॥ देव दे० यच्चक्रं मा मां निघ्नन्तु भूमिपाः ॥४१॥ श्री गौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः । ताभिरभ्युद्यत ज्योति, रर्हं सर्व निधीश्वराः॥४२॥

पातालवासिनो देवाः, देवा भूपीठवासिनः । स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः सर्वे रक्षन्तु मामितः॥४३॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जना भूत बेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देव देव प्रभावतः॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मीः, गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया नित्या, क्लिन्नाजितामद द्रवा ॥४६॥ कामाङ्गा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी । माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥४७॥ एताः सर्वा महा देव्यो, वर्त्तन्ते या जगत्त्रये। मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्ति कीर्ति धृतिं मतिम् ॥४८॥ दिव्यो गोप्यः सदुष्प्राप्यः ऋषिमण्डलसंस्तवः । भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघः ॥४९॥ रणे राजकुलेवह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम् ॥५०॥ राज्य भ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदम् ।

लक्ष्मी भ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतम् । वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः स्मरण मात्रतः ॥५२॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यैवेष्टमहासिद्धिर्गृहे वसति शाश्वती ॥५३॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं, गलके मूर्ध्नि वा भुजे । धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्व भीति विनाशकम् ॥५४॥ भूतैर्प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः । वात पित्त कफोद्रेके र्मुच्यते नात्र संशयः ॥५५॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठ, वर्तिनः शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैर्यत् फलं तत्फलं श्रुतौ ॥५६॥ एतद्गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववासिनो दत्ते, बालहत्या पदेपदे ॥५७॥ आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीम् । अष्टसाहस्त्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥५८॥ शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने । तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति न चापदः ॥५९॥ अष्टमा-

सावधिं यावत्, नित्यं प्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतद् महातेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥६०॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम् । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्द नंदितः ॥६१॥ विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥६२॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तवानामुत्तमं परम् । पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमुत्तमम् ॥६३॥

(इति श्रीऋषिमण्डलस्तोत्रं क्षेपकश्लोकान्निराकृत्य मूलमन्त्र-कल्पनानुसारेण लिखितं गणिभिः श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायैः, तदेवात्रास्माभिर्मुद्रितम् ।)

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिनवृद्धस्तवनम् ॥

(दूहा) वाणी ब्रह्मावादिनी, जागै जग विख्यात । पास तणां गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगै अणहलपुरे, अहमदाबादें पास । गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ बेला शुभ दिन घड़ी मुहुरत एक मंडाण । प्रतिमा ते इह पासनी,

थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ (ढाल) गुणहि विशाला मङ्गलीक माला, वामानो सुत साचोजी । धण कण कञ्चण मणि माणक दे, गौडीनो धणी जाचौजी (गु०) ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा, तुरक तणें घर हुँतीजी । अश्वनी भूमि अश्वनी पीडा, अश्वनी वालि विगूती जी (गु०) ॥ ५ ॥ जागन्तो जक्ष जेहनै कहियै, सुहणो तुरकनै आपै जी । पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ संतापै जी (गु०) ॥ ६ ॥ प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीनेदीजे जी । अधिक म लेजे ओछो म लेजे, टक्का पांचसे लेजे जी (गु०) ॥ ७ ॥ नहिं आपिस तो मारीस मुरडीस, मोर बंध बंधास्ये जी । पुत्र कलत्र धन हयहाथी तुझ, लाछि घणीघर जास्यै जी (गु०) ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै, सारथवाह जे गोठी जी । निलवट टीलो चोखा चेढ्या, वस्तु वहै तसु पोठी जी (गु०) ॥ ९ ॥ (दूहा)

मनसु बीहनो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण । बीबी नें सुहणा तणो, संफलावै सहिनाण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, बड़ा देव है कोय । अवस ताव परगट करो, नहीतर मारे सोय ॥ ११ ॥ पाछली रात परोडीयै, पहली बाँधै पोज । सुहणा माहें सेठने, संभलावै जक्ष राज ॥ १२ ॥ (ढाल) एम कही जक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणै जी । पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी (एम०) ॥ १३ ॥ पाँचसै टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी । जतन करी पहुँचाडे थानिक, प्रतिमा गुण संभारैजी (एम०) ॥ १४ ॥ तुझने होसी बहु फल दायक, भाई गोठीने सुणजे जी । पूजीस प्रणमीश तेहना पाया, प्रह उठीने थुणजे जी (ए०) ॥ १५ ॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थांनक पहुँतो जी । पाटण माहें सारथवाहु, हीडै तुरकने जोतो जी (ए०) ॥ १६ ॥ तुरकै जातां दीठी गोठी,

चोखा तिलक लिलाडै जी । संकेत पहुतो साचो जाणि, बोलावे बहु लाडै जी (ए०) ॥ १७ ॥ मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपुं, पास जिनेसर केरी जी । पांचसै टक्का जो मुझ आपै, मोल न मांगु फेरी जी (ए०) ॥ १८ ॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुँतो रंग जी । केसर चन्दन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी (ए०) ॥ १९ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखै जी । अनुक्रम आव्या परिकर मांहें, श्रीसंघने सुर साखै जी (ए०) ॥ २० ॥ उच्छव दिन २ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी । ठाम २ ना दरसण करवा, आवे लोक प्रभातो जी (ए०) ॥ २१ ॥ (दूहा) ॥ इक दिन देखै अवधसुं, परिकर पुरनो भंग । जतन करूँ प्रतिमा तणो, तीरथ अछै अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपै सेठने, थल अटवी उज्जाड । महिमा थास्यै अति घणी, ...त , तिहां पहुँचाड ॥ २३ ॥ कुशल खेम तिहां

अछै, तुझनें मुझने जाणि । शंका छोड़ी काम करि, करतो मकरि संकाणि ॥ २४ ॥ (ढाल) । पास मनोरथ पूरा करै, वाहण एक ऋषभ जोतरै । परिकरथी परियाणों करै, एक थल चढ़ि बीजो उतरै ॥ २५ ॥ बारै कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चालै तेतलै । गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंडावुँ सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूँ प्रयाण, कटको कोइ न दीसै पाहाण । देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुँ किम गरथें विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्यै किहां, सिलावटो किम आवे इहां । चिन्तातुर थयो निद्रा लहै, यक्षराज आवीने कहैं ॥ २८ ॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां । स्वस्तिक सोपारीने ठाणि, पाहण तणी उल्लटस्ये खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जलनी सरसी कूओ । खारा कुवा तणो इह सैनाण, भूमि पड्यो छै नीलो

छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसै कोड परा-
भवियो किसमिसे । तिहाँ थकी तुँ इहां आणजे,
सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन
थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो । रोग
गमीने पूरू आस, पास तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥
सुपन मांहे मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो
नैंण । गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया
तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलावटा आवै सुरमो, जिमें खीर
खांड घृत चूरमो । घडैं घाट करैं कोरणी, लगन
भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थम्भ २ कीधो पूतली,
नाटक कोतुक करती रली । रंग मंडप रलियामणों
रसै, जोतां मानवनो मन वसै ॥ ३५ ॥ नीपायो
पूरो प्रसाद, स्वर्ग समो मांडे आवास । दिवस
विचारी इंडो घड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढ्यो
॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पव्वासण
बेटा श्रीपास । महिमा मोटी मेरु समान, एक-
लमिल वगडे रहैवान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी मैं

सांभली, तवन मांहि सूधी सांकली । गोठी तणा गोतरिया अछै, यात्रा करीने परणे पछे ॥ ३८ ॥ (दोहा) ॥ विघन विडारन यक्ष जगि, तेहनो अकल सरूप । प्रीत करे श्रीसंघने, देखाडे निज रूप ॥३९ ॥ गरूओ गौडी पास जिन, आपे अरथ भंडार । सांनिध करै श्री संघने, आसा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणै नील हय, नीलो थई असवार । मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥४१ ॥ (ढाल) वरण अढार तणो लहै भोग, विघन निवारे टालै रोग । पवित्र थई समरै जें जाप, टालै सगला पाप सन्ताप ॥४२॥ निर-धनने घरि धन नो सुत, आपै अपुत्रीयाने पुत । कायरने सूरापण धरै, पारउतारै लच्छी वरै ॥४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग ; पग विहूणाने आपै पाग । ठाम नहीं तेहन दे ठाम, मनवंछित पूरें अभि-राम ॥ ४४ ॥ निराधार ने दे आधार, भवसागर उतारे पार । आरतियानी आरत भंग, धरै ध्यान

ते लहै सुरङ्ग ॥ ४५ ॥ समस्या सहाय दीजै यक्ष राज, तेहना मोटा अछै दिवाज । बुद्धि हीण ने बुद्धि प्रकाश, गूँगाने वचन विलास ॥४६॥ दुखियाने सुखनो दातार, भय भंजण रंजण अवतार । बंधन तुटे वेणी तणी, श्रीपार्श्व नाम अक्षर स्मरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा) श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल । हस्त जूथ दूरे टलै, दुद्धर सिंह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा भय चुकवे, विष अमृत उडकार । विष धरनो विष ऊतरे, संग्रामें जय जय कार ॥ ४९ ॥ रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पलाय । परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (कड-खानी चाल) उं जितु २ उं ज उपसम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्री पार्श्व अक्षर जपंते । भूत ने प्रेत झोटिङ्ग व्यन्तर सुरा, उपसमे वार इकवीस गुणंते (उं) ॥ ५१ ॥ दुद्धरा रोग सोगा जरा जंतुने, व एकान्तरा दुत्तपंते । गर्भबन्धन व्रणं सर्प

विच्छू विषं, चालिका बालमेवा झखंतै (उं०) ॥ ५२ ॥ साइणी डाइणी रोहिणी रङ्कणी फोटका मोटका दोष हुँते । दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकराल दंते ॥ ५३ ॥ (उं०) धरणेन्द्र पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटवी अटंतै । लखमी लोहूँ मिलैं सुजस वेला उलै, सयल आस्या फलै मन हसंतै (उं०) ॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरें कानपीड़ा टलै, ऊतरै सूल सीसग भणंते । वदत वर प्रीतसुँ प्रीतिविमल प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम सन्तै (उंजित,) ॥ ५५ ॥

(इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्ध स्तवनं समाप्तम् ।)

॥ श्री गौतम स्वामिजी का रास ॥

वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कय वासो ; पणमिवि पभणिसुँ सामीसाल, गोयम गुरु रासो । मण तणु वयण एकंत करिवि, निसुणहु

भविया ; जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त, खोणी तल मंडण ; मगह देस सेणिय नरेश, रिऊ दल बल खंडण । धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा ; विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इन्दभूइ, भूवलय पसिद्धो, चउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर ; सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज जल पाडिय ; तेजहिं तारा चन्द सूरि, आकाश भमाडिय । रूवहि मयण अनंग करवि, मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गम्भीर सिन्धु, चंगम चय चाडिय ॥ ४ ॥ पेक्खवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय, एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्या संचिय । अहवा निच्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गउरी गङ्ग,

तिहा विधि वंचिय ॥५॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय, जसु आगल रहियो, पंचः सयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो । करय निरन्तर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय ; अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजान ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चोवहि संघ पइट्ठा जाणी । पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥८॥ देवहि समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे । त्रिभुवन गुरु सिंहासन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा । देव-दुन्दुभि आगासे वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥१०॥

कुसुम वृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा । चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वर वरसन्ता, जोजन वाणि वखाण करन्ता । जाणिवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कन्त समोहिय जलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकन्ता । पेक्खवि इन्दभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता । तो अभिमाने गोयमजंपे इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युँ बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले । मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह संसारतारण, तिहिं देवइ निम्महिय समवसरण बहु सुक्ख कारण जिणवर जग उज्जोय करै, तेजहि कर दिनकार सिंहासण

सामी ठव्यो, हुओ तो जय जयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्दभूइ भूयदेव तो, हुँकारो करि संचरिय, कवणसु जिणवरदेव तो। जोजन भूमि समोसरण, पेक्खवि प्रथमारंभ तो, दह दिस देखे विबुध वधू, आवती सुररम्भ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दण्ड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो, वइर विवर्जित जन्तुगण, प्रातीहारिज आठ तो। सुर नर किन्नर असुरवर, इन्द्र इन्द्राणी राय तो, चित्त चमक्किय चिंतवए, सेवन्ता प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो ; एह असम्भव सम्भव ए, साचो ए इन्द्रजाल तो। तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इन्द्रभूइ नामेण तो, श्रीमुख संसय सामी सबे, फेडे वेद पएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतिहिं नाम्यो सीस तो, पंच सयांसु व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो। बन्धव संजम सुणिवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ; नाम लेई

आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो, तो उपदेशे भुवन गुरु, संयमसू ंब्रत बार तो । त्रिहुँ उपवासें पारणो ए, आपणपे विहरन्त तो ; गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करन्त तो ॥२१॥ वस्तु ॥ इन्द्रभूइ इन्द्रभूइ चढियो बहुमान, हुँकारो करि कम्पतो, समवसरण पहुतो तुरन्त तो ; जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरन्त तो ; बोधिबीज संजाय मनें, गोयम भवहि विरत्त, दिक्खा लेई सिक्खा सही, गणहर पय सम्पत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिमा पुण्य भरो, दीठा गोयम सामि, जो निय नयणों अमिय सरो । समवसरण मझार, जे जे संसाऊपजेए, ते ते पर उपगार कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जीहां जीहां दीजें दीख, तीहां तोहां केवल ऊपजे ए, आप कनें अणहुँत, गोयम दीजें दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय, एणिछल

केवल नाण, रागज् राखे रङ्ग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद शैल, वन्दे चढ चउवीस जिण, आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सो ज मुनि । इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय, तापस पन्नर सएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अङ्ग-अम्हां मंगति न उपजे ए, किम चढसे दृढ़ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए । गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए, तो मुनि चढियो वेग, अलम्बवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्फन्न, दंडकलस ध्वजवड सहिय, पेखवि परमाणन्द, जिणहर भरतेसर महिय । निय निय काय प्रमाण, चिहुँ दिसि संठिय जिणह बिम्ब, पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर-सामीनो जीव, तिर्यक् जृम्भक देव तिहां प्रतिबोध्यो पुडरीक, कंडरिक अध्ययन भणी । वलतो गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ,

चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे, गोयम एकण पात्र, करावे पारणा सवे । पंच सयां शुभ भाव,उज्जल भरियो खीर मिसे, साचा गुरु संयोग, कवल ते केवल रूप हुए ॥ २९ ॥ पञ्च सयां जिणनाह, समवसरण प्रकारत्रय, पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे । जाणे जणवि पीयूष, गाजन्ती घन मेघ जिम, जिनवाणी निसुणोवि, नाणी हुआ पंच-सया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसे, उप्पन्न परिवरिय हरिदुरिय जिणनाह वन्दइ, जाणेवि जगगुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निन्दइ । चरम जिनेसर इम भणो, गोयम म करिस खेव, छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणन्द, पूनमचन्द जिम उल्लसिय, विहरियो ए भरहवा-सम्मि, वरस बहुत्तर संवसिय । ठवतो ए कणाय पउमेण, पाय कमल संघै सहिय, आवियो ए

नयणानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥
पेसियो ए गोयम सामि, देवसमा प्रतिबोध करे ;
आपणो ए तिसला देवि, नन्दन पुहतो परमपए ।
वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समो
ए, तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम
ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि,
आप कनासुं टालियो ए, जाणतो ए 'तिहुअण
नाह, लोक विवहार न पालियो ए । अतिभलों
ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मांगसे ए,
चिन्तव्यो ए बालक जेंम, अहवा केडे लागसे ए
॥ ३४ ॥ हूँ किम ए वीर जिणंद, भगतिहि भोले-
भोलव्यो ए, आपणो ए उचलो नेह, नाह न संपे
साचव्यो ए । साचो ए वीतराग, नेह न हेजेंला-
लियो ए तिणसमे ए, गोयमचित्त, राग वैरागे
वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो एं जो उल्लट रहितो
रागे साहियो ए; केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम
सहिज ऊमाहियो ए । तिहुअण ए जय जयकार,

केवल महिमा सुर करे ए, गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर बरस पच्चास, गिह-वासें संवसिय, तीस बरस संजम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण, बार बरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो वाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चन्दन सोगन्ध निधि । जिम गङ्गाजल लहिरया लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरु वर कणय वतंसा, जिम महुयर राजीव वनें । जिम रयणायर रयणों विलसे, जिम अम्बर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केल घनें ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, तरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिस जिम

सहसकरो। पञ्चानने जिम गिरिवर राजे, नरवई घरजिम मयगल गाजे, तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतिक महमह ए। जिम भूमीपति भुयवल चमके, जिम जिन मन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुर तरु सारे वंछिय काज, कामकुम्भ सहु वशि हुआ ए। कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयस अणुसरि ए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजें, माया बोजो श्रवण सुणीजे, श्रीमति सोभा सम्भवाए। देवां धुर अरहित नमीजे, *विनय पहु उवझाय थुणीजें, इण मन्त्रे गोयम नामो ए ॥ ४३ ॥ पर घर वसन्ता काय करीजे, देस देसान्तर काय भमीजे,

* यह श्री विनयप्रभ उपाध्याय जी श्री जिन कुशल सूरिजी के जिनका स्वर्गवास वि० सं० १३८९ में हुआ था, शिष्य थे।

कवण काज आयास करो । प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहां परे ए ॥ ४४ ॥ चवदय सय आहोत्तर वरसे गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो । आदिहिं मङ्गल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिले दीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए । विनयवन्त विद्या भण्डार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए । गोयम सामीनो रास भणीजे, चहुविह सङ्घ रलियायत कीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥४६॥ कुंकुम चन्दन छडो दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए । तिहां बेसी गुरु देसना देसी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥

इति श्री गौतम स्वामि-रास सम्पूर्ण।

॥ अथ वृद्धनवकार ॥

किं कप्पत्तरुरे अयाण चिंतउ मणभिंतरि, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसान्तर लंघउ, रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघउ ॥ चवदे पूरब सार युग लद्धउ ए नवकार, सयल काज महियल सरे दुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ केवलि भासिय रीत जिके नवकार आरा है, भोगवि सुक्ख अणन्त अन्त परम प्पयसा है ॥ इण झाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु परि, इण झाणे सुर लोक इन्दपद पामे सुन्दरि ॥ एह मन्त्र सासतो जगे अचिन्त्र चिन्तामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर झाण मज्झ चिन्तवै कमल नर,कञ्चणमय अठदल सहित तिहाँ माँहे कनकवर ॥ तिहाँ बेठा अरिहन्तदेव पउमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहरेवि पढम पय चिन्तउ नियमणि ॥ निव्वारय चउ गइ गमण

पामिय सासय सुक्ख अरिहन्त झाणे तुम लहो जिम अजरामर मुक्ख ॥ ३ ॥ पनर भेय तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विद्रुमतणे वन्न-निय सोहाग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धहिं पुव्वेदिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसे वसि ॥ मूलमन्त्र वशीकरण अवर सहू जगधन्द, मणमूली ओषध करे बुद्धि हीणजाचन्ध ॥ ४ ॥ दक्षिण दिसि पंखडी जपे नमो आयरिआणं, सोव-नवन्नह सीस सहित उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारण लाभ ऊपर जे ध्यावे, पहरे पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावे ॥ इण झाणे नव निधि हुवे ए रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवझाय सीस पाढन्ता पच्छिम, आराहिज्जे अङ्ग पुव्व धारन्त मणोरम ॥ पच्छिम दिस पंखडीय कमल ऊपर सुहझाण, जोवौ परमानन्द देव गये तासु विमाणां ॥ गुरु लघु जे रक्खे विदुर तिहां

नर बहु फल होइ, मन सूधै विण जे जपे तिहाँ फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व्व साधु उत्तर विभाग सामलो बइठा, जिण धर्म लोय पयासयन्त चारित्र गुण जिठा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके झाणै, पञ्चवन्न तिहां नाण झाण गुण एह पमाणो ॥ अनन्त चोवीसी जग हुइए होसी अवर अनन्त, आदि कोइ जाणे नही इण नवकारह मन्त ॥ ७ ॥ एसो पंच नमुक्कारो पद दिसिअ गणेहिं, सव्व पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि झाएह मङ्गलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मङ्गलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुँ दिसि चिहुँ विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रभाव धरणिन्द हुओ पयालह सामो, समलीकुमर उपन्न भिल्ल सुर लोयह गामी ॥ सम्बल कम्बल बे बलध पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय

करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ छींके बैठो चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नव-कारह नासी ॥ वाछरू आचारन्त बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही उयर मन्त्र जपियो मन-मांहे ॥ चिन्त्या काज सबे सरे इरत परत विमास पालित सूरि तणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥१०॥ चौर धाड सङ्कट टले राजा वसि होवे, तित्थङ्कर सो होइ लाख गुण विधिन्सु जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सबे नासै एणही मन्त, मयणासुन्दरितणी परे नव पय झाण करन्त ॥ ११ ॥ एक जीह इण मन्त्रतणा गुण किता बखाणुँ, नाणहीण छउमच्छ एह गुण पार न जाणूँ ॥ जिम सत्तुंजय तित्थराउ महिमा उदयवन्तो, तिम मन्त्रे धुरि एह मन्त्र राजा जयवन्तो ॥ तित्थङ्कर गणहर पणिय चवदह

पूरब सार, इण गुण अन्त न, को लहे गुण गिरुवो नवकार ॥ १२ ॥ अड सम्पय नव पय सहित इगसठ लहु अक्खर, गुरु अक्खर सत्तैव इह जाणो परमाक्खर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे सिव सुक्खह, कारण नरय तिरय गय रोग सोग बहु दुक्ख निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुव इक चित्त, पञ्च परमेष्टि मन्त्रह तणो सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥

(इति पञ्च परमेष्टि महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र सम्पूर्णम् ॥)

॥ अथ श्री कल्याणमन्दिर स्तोत्रम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रद-मनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् । संसारसागरनिमज्जदशेष-जन्तु-पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत-मतिर्न विभुर्विधातुम् । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूम-केतो-स्तस्याह-मेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप,

मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः ? धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ? ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा-न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ? ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निज-बाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बु-राशेः ? ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणा-स्तवेश !, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ? । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति वा निज-गिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिन्त्य-महिमा जिन ! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो ! शिथिलीभवन्ति, जन्तोः

क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो भुजङ्गम-मया इव मध्यभाग-- मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारको जिन ! कथं भविनां ? त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदु-त्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः । जन्मोदधिं लघु तरन्त्य-तिलाघवेन ?, चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत कथं किल क

प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके, नीलद्रुमणिमा विपनानि न किं हिमानी ? ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप- मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा किमन्य-दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ? ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति । तीव्रानला=दुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्व मचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥ अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ? । एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुध्या, ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः । पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ? ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं का-

चकासल्लिभिरीश । सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते ? विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्य-शोकः । अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ? ॥ १९ ॥ चित्रं विभो ! कथमवाङ् मुखवृन्तमेव, विष्वक् पतत्य-विरला सुरपुष्पवृष्टिः ? । त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसं-भवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पीत्वा यतः परमसंमदसंखभाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्य-जरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् ! सुदूरमवनस्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरोघाः । येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय, ते नूनमूर्ध्व-गतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीर-गिरिमुज्ज्वलहेमरत्न—सिंहासनस्थमिह भव्यशि-खण्डिनस्त्वाम् । आलोकयन्ति रभसेन नदन्त-

मुच्चै—श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांम्बुवाहम् ॥२३॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव । सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ? ॥२४॥ भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन—मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् । एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय, मन्येन दन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ ! तारान्वितो विधुरयं विहिताधिकारः । मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र—व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन, कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन । माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजो जिन ! नमन्त्रिदशाधिपाना—मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् । पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥

त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारय-, स्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् । युक्तं हि पार्थिवनि-पस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो ! यदसि कर्मविपाक-शून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्ग-स्त्वं, किंवाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश । अज्ञान-वत्यपि सदैव कथञ्चिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा—दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायाऽपि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्-गर्ज्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमां-सलघोरधारम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड--प्रालम्बभृद्भयद-वक्त्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य—माराध-

यन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः । भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्म-भाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश !, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ? ॥ ३५ ॥ जन्मान्तरेऽपि तव पाद युगं न देव !, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् । तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृत-लोचनेन, पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते ? ॥३७॥ आकर्णितोऽपि, महि-तोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥३८॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य ?, कारुण्य-पुण्यवसते वशिनां वरेण्य, भक्त्या नते मयि महेश !

दयां विधाय, दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसङ्ख्य सारशरणं शरणं शरण्य—मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् । त्वत्पादपङ्कज-मपि प्रणिधानवन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिल-वस्तुसार !, संसारतारक विभो ! भुवनाधिनाथ । त्रायस्व देव ! करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि संतति-संञ्चितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !, सान्द्रोल्लसत्पु-लककञ्चुकितांगभागाः । त्वद् बिम्बनिर्मलमुखाम्बु-जबद्धलक्षा, ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसंपदोभुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया, अचि-रान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ ४४ ॥ युग्मम् ॥

॥ इति श्रीकल्याणमन्दिर-स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ तिजयपहुत्तनामकं स्मरणम् ॥

तिजयपहुत्तपयासय-अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं समयक्खित्तठियाणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥१॥ पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवर समुहो । नासेउ सयल दुरिअं, भविआणं भत्ति-जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिन्दा । गहभूअरक्खसाइणि-घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो । वाहिजलजलणहरि-करि-चौरारिमहाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुँहः सरसुँसः, हरहुँहः तह य चेव सरसुँसः । आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वओ भद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्झसिंखला तह य वज्झअंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता, कालि [illegible] तह गोरी ॥ ७ ॥ गन्धारी महजाला,

माणवि वइरुट्ट तह य अच्छुता । माणसि महा-
माणसिआ, विज्झा देवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंच-
दसकम्मभूमिसु, उपन्नं सत्तरी जिणाण सयं ।
विविहरयणाइवन्नो-वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥
चउतीसअइसयजुआ, अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा ।
तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥ १० ॥
ॐ वरकणयसंखविद्द म—मरगयघणसन्निहं विग-
यमोहं सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे
॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइ वाणवंतर, जोइ-
सवासी विमाणवासी अ । जे केवि दुट्ठ देवा, ते
सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण-
कप्पूरेणं, फलए लिहिउण खालिअं पीअं । एगंत-
राइगहभूअ—साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ
सत्तरिसयं जतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं ।
दुरिआ र विजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥१४॥

॥ इति ॥

जयतिहुअणनामकं स्तोत्रम् ।

जय तिहुअणवरकप्परुक्ख जय जिण धन्नंतरि,

जय तिहुअणकल्लाणकोस दुरिअक्करिकेसरि। तिहु-अणजणअविलंघिआण भुवणत्तयसामिअ, कुणसु सुहाइं जिणेस पास थंभणयपुरट्ठिअ ॥ १ ॥ तइ समरन्त लहंति झति वरपुत्तकलत्तइ, धण्णसुवण्ण-हिरण्ण-पुण्ण जण भुँजइ रज्जइ। पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास पसाइण, इअ तिहुअणवर-कप्परुक्ख सुक्खइ कुण मह जिण ॥ २ ॥ जरज-ज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नर सल्लिय सूलिण। तुह जिण सर-णरसायणेण लहु हुँति पुणण्णव, जय-धन्नंतरि पास मह वि तुह रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइसमं-ततंतसिद्धीउ अपयत्तिण, भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण। तुह नामिण अप-वित्तओ वि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्ला-णकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पउत्तइ मंततंतजंताइ विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरि-वग्ग विगंजइ। दुत्थिअसत्थ अणत्थघत्थ नित्था-

रइ दय करि, दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियक्क-
रिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणा थंभेइ भीमदप्पुद्धर-
सुरवर, रक्खसजक्खफणिंदविंदचोरानलजलहर ।
जलथलचारि रउद्दखुद्दपसुजोइणि जोइय, इअ
तिहुअणअवि लंघिआण जय पास सुसामिय ॥६॥
पत्थिअ अत्थ अणत्थ तत्थ भत्तिब्भरनिब्भर,
रोमंचंचिय-चारुकाय किन्नरनरसुरवर । जसु
सेवहि कमकमलजुयल पक्खालियकलिमलु, सो
भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥
जय जोइयमणकमलभसल भयपंजर कुंजर, तिहु-
अणजणआणंदचंद भुवणत्तयदिणयर । जय मइमेइ-
णिवारिवाह जयजंतुपियामह, थंभणयट्ठिय पास-
नाह नाहत्तण कुण मह ॥ ८ ॥ बहुविहुवन्नु अव-
न्नु सुन्नु वन्निउ छप्पन्नि हं, मुक्खधम्मकामत्थ-
काम नर नियनियसत्थिहिं । जं झायहि बहुदरि-
सणत्थ बहुनामपसिद्धउ, सो जोइयमण कमलभसल
सुहु पास पवद्धउ ॥ ९ ॥ भयविब्भल रणझणि-

रदसण थरहरिय सरीरय, तरलियनयण विसुन्न सुन्न गग्गरगिर, करुणय । तइ सहसत्ति सरंत हुँति नर, नासियगुरुदर, मह विज्झवि सज्झसइ पास भय-पंजर कुंजर ॥ १० ॥ पइं पासि वियसंतनित्त-पत्तंतपवित्तिय —बाहपवाहपवूढरूढदुहदाह सुपुल-इय । सन्नइ सन्नु सउन्नु पुन्नु अप्पाणं सुर नर इह तिहुअणआणंदचंद जय पास जिणेसर ॥११॥ तुह कल्लाण-महेसु घण्टटंकारऽवपिल्लिय, वल्लिर-मल्ल महल्लभत्ति सुरवर गंजुल्लिय । हल्लुप्फलिय पवत्तयंति भुवणो वि महसव, इय तिहुअणआणंद-चन्द जय पास सुहुब्भव ॥ १२ ॥ निम्मलकेवल किरणनियरविहुरियतमपहयर, दंसियसयलपयत्थ-सत्थ वित्थरियपहाभर । कलिकलुसियजणघुयलो-यलोयणह अगोयर, तिमिरइ निरु हर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिस-सित्त माणवमइमेइणि, अवरावरसुहुमत्थबोहकन्द-लरेहणि । जाइय फलभर भरिय हरियदुहदाह

अणोवम, इय मइमेइणि वारिवाह दिस पास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकलकल्लाणवल्लि उल्लूरिय दुहवणु, दाविथ सग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगमवारणु । जयजन्तुह जणयण तुल्ल जं जणिय हियावहु, रम्मु धम्मु सो जयउ पासु जयजन्तु पियामहु ॥ १५ ॥ भुवणारण्णनिवास-दरिय-परदरिसणदेवय, जोइणिपूयणखित्तवालखुद्दासुरपसुवय । तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु अविसंठुलु चिट्ठहि, इय तिहुअणवणसीह पास पावाइं पणासहि ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयणकररंजियनहयलफलिणीकन्दलदलतमालनीलुप्पलसामल । कमठासुरउवसग्गवग्गसंसग्गअगंजिय, जय पच्चक्खजिणेस पास थम्भणय पुरट्ठिय ॥१७॥ मह मण तरलु पमाणु नेय वायावि विसंठुलु, नेय तणु रवि अविणयसहावु आलसविहलंथुलु । तुह माहप्पु पमाणु देव कारुण्णपवित्तउ, इय मइ मा अवहीरि पास पालिहि विलवन्तउ ॥ १८ ॥ किं किं कप्पिउ न य कलुणु किं किं व न जंपिउ,

किं व न चिह्निउ किट्ठु देव दीणयमवलंबिउ । कासु न किय निप्फल्ल ललिल अम्हेहि दुहत्तिहि, तहवि न पत्तउ ताणु कि पि पइ पहु परिचत्तिहि ॥ १९ ॥ तुहु सामिउ तुह मायबप्पु तुह मित्त पियंकरु, तुहु गइ तुहु मइ तुहुजि तणु तुहु गुरु खेमंकरु, हउं दुहभरभारिउ वराउ राउ निब्भग्गह, लीणउ तुह कमकमलसणु जिण पालहि चंगह ॥ २० ॥ पइ कि वि कय नीरोय लोय कि वि पाविय सुहसय, कि वि मइमन्त महन्त के वि कि वि साहियसिवपय । कि वि गंजियरिउवग्ग के वि जसधवलियभूयल, मइ अवहीरहि केण पास सरणागयवच्छले ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीह नाह निप्पन्नपओयण, तुह जिणपास परोवयारकरणिक्कपरायण । सत्तुमित्तसमचित्तवित्त नयनिंदयसममण, मा अवहीरि अजुग्गओ वि मइ पास निरंजण ॥ २२ ॥ हउँ बहुविहदुहतत्तगत्तु तुहु दुहनासण-ु, हउँ सुयणह करुणिक्कठाणु तुहु निरु करुणा-

यरु । हउँ जिण पास असामिसालु तुहु तिहुअण-
सामिअ, जं अवहीरहि मइ झखन्त इय पास न
सोहिय ॥ २३ ॥ जुग्गाऽजुग्गविभाग नाह न हु
जोयहि तुह सम, भुवणुवयारसहाव भावकरुणार-
ससत्तम । समविसमइं किं घणु नियइ भुवि दाह
समन्तउ, इय दुहिबंधव पासनाह मइ पाल थुणं-
तउ ॥ २४ ॥ न य दीणह दीणयं मुयवि अन्नु
वि किं वि जुग्गय, जं जोइ वि उवयारु करहि
उवयारसमुज्जय । दीणह दीणु निहीणु जेण तइ
नाहिण चत्तउ, तो जुग्गउ अहमेव पास पालहि
मइ चंगउ ॥ २५ ॥ अह अन्नु वि जुग्गय विसेसु
कि वि मन्नहि दीणह, जं पासि वि उवयारु करइ
तुहु नाह समग्गह । सुच्चिय किल कल्लाणु जेण
जिण तुम्ह पसीयह, किं अन्निण तं चेव देव मा
मइ अवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थण न हु होइ
विहलु जिण जाणउ किं पुण, हउँ दुक्खिय निरु
सत्तचत्त दुक्कहु उस्सुयमाण । तं मन्नउ निमिसेण

एउ एउ वि जइ लब्भइ, सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिय पास-नाह मइ अप्पु पयासिउ, किज्जउ जं नियरूव सरिसु न मुणउ बहु जंपिय । अन्नु न जिण जग्गि तुह समो वि दक्खिनु दयासउ, जइ अव-गन्नसि तुह जि अहह कह होसु हयासउ, ॥ २८ ॥ जइ तुह रूविण किण वि पेयपाइण वेलवियउं, तु वि जाणउ जिणपास तुम्हि हउँ अङ्गीकरिअउ, इय मह इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु, रक्खंतह नियकित्ति णेय जुज्जइ अवहीरण ॥ २९ ॥ एह महारिय जत्त देव इहु ण्हंवणमहूसउ, जं अणलियगुणगहण तुम्ह मुणि-जण अणिसिद्धउ । एम पसीहसु पासनाह थंभण-यपुरट्ठिय, इय मुणिवरु सिरि अभयदेउ विन्नवइ अणिंदिय ॥ ३० ॥

॥ इति जयतिहुअणनामकं स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

—:०:—

श्री गौतमाष्टकम् ।
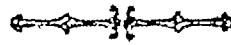
श्रीइन्द्रभूतिवसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीभवं गौतम-गोत्ररत्नम् । स्तुवन्ति देवाःसुरमानवेन्द्राः, स गौतमा यच्छतु वांछितं मे ॥ १ ॥ श्रीवर्द्धमानस्त्रिपदीम-वाप्य, मुहूर्त मात्रेण कृतानियेन । अङ्गानि पूर्वाणि चतुर्दशापि, स गौ० ॥ २ ॥ श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीतं, मन्त्रंमहानंदसुखाय यस्य । ध्यायन्त्यमी सूरिवराः समग्राः, स गौ० ॥ ३ ॥ यस्याभिधानं मुनयोऽपिसर्व्वे, गृह्णन्ति भिक्षां भ्रमणस्यकाले । मिष्टान्नपानाम्बरपूर्णकामाः, स गौ० ॥ ४ ॥ अष्टा-पदाद्रौ गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवंद-नाय । निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः, स गौ० ॥५॥ त्रिपञ्चसंख्याशततापसानां, तपःकृशानाम पुन-र्भवाय । अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता, स गौ० ॥ ६ ॥ सदक्षिणं भोजनमेवदेयं, साधर्मिकं सङ्घ सपर्ययेति । कैवल्यवस्त्रं प्रददौ मुनीनां, स गौ०

॥ ७ ॥ शिवङ्गते भर्तरि वीरनाथे, युगप्रधानत्व-मिहैव मत्वा। पट्टाभिषेको विदधे सुरेन्द्रैः, स गौ० ॥ ८ ॥ त्रैलोक्यबीजं विज्ञानबीजं, परमात्मबीजं परमेष्टिबीजम्। यन्नाममंत्रं विदधे सुरेन्द्रैः, स गौ० ॥ ९ ॥ श्रीगौतमस्याष्टकमादरेण, प्रबोधकाले मुनिपुङ्गवा ये। पठन्ति ते सूरिपदं सदैवा, नन्दं लभन्ते सुतरां क्रमेण ॥ १० ॥

इति गौतमस्याष्टकम् समाप्तम्।

॥ अथ गुर्वष्टकम् ॥

नमाम्यहं श्रीजिनदत्तसूरिं, गुणाकरं किन्नर-पूज्यपदाम्। यतीश्वरं तुष्टिकरं स्वरूपं, लावण्य-गात्रं बहुसौख्यकारम् ॥ १ ॥ भूपानरा ये प्रणमंति नित्यं, तेषां मनीषां सफलीकरोति। लक्ष्मीर्यशो राज्यरतिं प्रसूते, विद्यावरं श्रीललनासुखानि ॥ २ ॥ भक्त्या नरा ये तव पदसेवां, कुर्वन्ति सत्पुत्रलभंत एव। न दुःखदौर्भाग्यभय न मारिः, स्मरन्ति ये श्रीजिनदत्तसूरिम् ॥ ३ ॥ कविः स्वबुध्द्या गुरुसं-

निभोपि, कस्ते गुणान् वर्णयितुं समर्थः। तथापि त्वद्भक्तिरतो मुनींद्रः, करोति किञ्चिद्गुणवर्णनं ते ॥ ४ ॥ महार्णवे भूधरमस्तकेपि, स्मरन्ति ये श्रीजिनदत्तसूरिम्। सुखैःसहायान्ति जनाःस्वधाम्नि, ततोभवंतं प्रणमामि कासम् ॥ ५ ॥ जैनाब्जसंबोधनपूर्णचन्द्रः, सत्सेवकेकामितकल्पवृक्षः। युगप्रधानं स्तुतसाधुसूरिं, सूरीश्वरं श्रीजिनदत्तसूरिम् ॥ ६ ॥ न रोगशोकारिपुभूतयक्षाः, न वा ग्रहाः राक्षसदेवरोषाः। नपीडयंते तवनाममन्त्रा, त्तस्मान्नराणां शिवदायकस्त्वम् ॥ ७ ॥ इदं गुरोरष्टकमुत्तमं यः, प्रभातकाले पठते सदैव। किंदुर्ल्लभं तस्य जगत्त्रयेपि, सिध्यन्ति सर्वाणि समीहितानि ॥८॥

॥ इति ॥

श्री जिनदत्तसूरि अष्टकम्।

सुरकिन्नरवन्दितपद्कमलं, सकलं समलंकृतभूमितलम्। गतपापमलं चरितैर्विमलं, जिनदत्त-

गुरुं प्रणताविरलम् ॥ १ ॥ भुवनत्रयसारियशः पटलं, खलमंडल खण्डनतः प्रबलम् । विषमायुध-वर्गदलं सरलं, जिनदत्तगुरुं प्रणमामि कलम् ॥ २ ॥ विषमस्थलपातिजनोद्धरणं, शरणं महसां-भविनांशरणम् । हरणं तमसाकमलाकरणं, प्रण-मामि गुरुशरणं प्रबलम् ॥ ३ ॥ वरपालितदुष्कर-सच्चरणं, जनतांचितकीर्त्तितसच्चरणम् । जित-दुर्जयचंचलभृत्करणं, सुगुरुं प्रणमामि लसत्कर-णम् ॥ ४ ॥ नरपैर्महितं मुनिपैर्विनुतं, प्रमदैरहितं क्षमया सहितम् । न परैश्चलितं न भयैस्खलितं, प्रणमामिगुरुं भुवने विदितम् ॥ ५ ॥ परमागम-स्वच्छमतिं प्रथितं, रसयाललितं सुजनैर्मिलितम् । सरसैः कथितंरुचिभिर्ल्लसितं, प्रणमामिगुरुं कविभिर्ध्वनितम् ॥ ६ ॥ भवतापहरं शिवशर्मकरं, धनधान्यभरं कृतमुत्प्रचुरम् । करुणानिलयं मुनि-प्राग्रहरं, जिनदत्तगुरुं प्रणमामि वरम् ॥ ७ ॥ वर-वाछगमंत्रि सुतं सुपदं, कृतवाहडदेणमनः प्रमु-

दम् । विगतव्यसनं हितदं समुदा, मुनिराजमहं प्रणमामि सदा ॥ ८ ॥ श्रीमच्छ्रीजिनदत्तसूरिसुगुरोः, कल्याणवल्लीतरोर्लब्धेरेकनिधे सुबुद्धिजलधे र्भाषांनिधेश्चिन्निधेः । प्रत्यूषे विधिना समर्थमुनिनां लब्धं गुरोरष्टकं, ये ध्यायन्ति नरा भवन्ति सततं वागीश्वराः श्रीधराः ॥ ९ ॥

॥ इति गुर्वष्टकं ॥

अथ कुशलगुरुदेव-स्तुतिः ।

सुखं सर्वा संपद् वसति पदयोर्यस्य वदने,
विनिद्रावागीशा हृदयकमले संचिदधिकम् ।
विरागः सर्वाङ्गेष्वपि च भगवद्भक्तिरनिशम्,
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ १ ॥
समयीनां, निशिस्वापाधीनं निशदिनमधीनौ सदा
परंवाणीर्लक्ष्म्योर्निलियमपितद्दानविपुणौ । स
यौ वर्त्तेते जयत इव पाथोजयुगुलं,
[illegible] क्षिपंतौ तौ प्रेक्षां सरसिरुहयोर्यौ

र्जपापुष्पाभासोः किशलयजिताशेषमहसोः । लसल्लेखालक्ष्मप्रकटितपरा श्रीसदनयोः, समृद्ध्यर्थं वन्दे० ॥ ३ ॥ सुरेभ्यः स्वस्थेभ्यः कतिपयदिनैर्यः फलमथो, कदाचिद्दत्तद्राक्श्रियमपि दरिद्राय परमाम् । सुरद्रुन्त्यत्कोपासतइतिबुधौ यौ भुविगतौ, समृद्ध्यर्थं वन्दे० ॥ ४ ॥ सुरैरास्वाद्यन्ते परमगुरुधर्मोपदिशतः, सदा कामं पीता मृतरसवरांशैरपिगिरः । श्रुता यस्य श्रेयः श्रियमपिदिशंतिस्थिरधियां, समृद्ध्यर्थं वन्दे० ॥ ५ ॥ निधिस्सवाश्रीणा मनधिकरणौ सर्वविपदाम् । मृदुस्निग्धौ शौणाबुपचितनखो गूढघुटिकौ । समानौ प्रोत्तुंगप्रपदपद शाखाविलसितौ, समृद्ध्यर्थं वन्दे० ॥६॥ ययोरर्च्चा सूते धनसुखधरा धामरमणिः, शरीरारोग्यत्वं विनयनयविद्यानिपुणताम् । गुणानौदार्यादीनपितनयलक्ष्मीः श्रितनृणां, समृद्ध्यर्थं वन्दे० ॥७॥ भयंकारागारामयसमरपारींद्रफणभृ, न्महापारावारः द्विरदनवैश्वानरभवम् ॥ नडाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजं-

यत्स्मरणतः, समृद्धयर्थं वन्दे० ॥८॥ इत्थं श्रीजिनपद्मसूरिरचितं दिव्याष्टकं सद्गुरोः। पुण्यं मन्त्रमयं मनोज्ञफलदं पापौघविध्वंसनम्। भक्त्या यः पठति प्रभातसमये सर्वत्र तस्य ध्रुवं, वश्या भूपतयो भवंति सततं लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी॥

॥ इति समाप्तम् ॥

श्री जिनदत्तसूरि अष्टकम्

श्रीवीरतीर्थेश्वरशासनस्य, प्रभावकःकौटिकगच्छनेता। चान्द्रेकुलेऽभूद्वरवज्रशाखा, प्रभाकरः श्रीजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ सदन्विकादत्तयुगप्रधानः, पदं प्रधानोतिशयर्द्धयुपेतः। विद्याचरणः सूरिगुणान्वितो यः, सूरीश्वरः सर्वनतो व्यराजत् ॥ २ ॥ धुंधुकाभिधसत्पुरे समजनि श्रीवांछिगोत्रीसखः। श्रीमद्बाहडदेव्युदारचरिता तस्याभवद्गेहिनी। तत्कुक्षावबतीर्य हुम्बडकुलोत्तंसः शिशुत्वेपि यः, श्रीमद्पाठक धर्मदेवसन्निधे जग्राह सव संय

॥ ३ ॥ श्रीयुक्ताभयदेवसूरिसुगुरोः, शिष्यैर्वराचार्यकैः, श्रीमद्भिः किलदेवभद्रगुरुभिः श्रीचित्रकूटे स्वयं । सूरेः श्रीजिनवल्लभस्यसुगुरोः पट्टे निवेश्याऽग्रिमे, यः श्रीमद् जिनदत्तनामविधिना श्रीसोमचन्द्राव यः ॥ ४ ॥ ततः स्वकीयोत्तममूलाविद्या, त्रिकोटिसंख्यस्मरणाद्विशुद्धा । सुरासुराभूरितरायदीयौ, पादौनमन्तिस्मसुहर्षवन्तः ॥५॥ सुसाधुसाध्वीसमुदाययुक्तताः, सुश्रावकणां वहवश्च वर्गाः । प्रबोधिता येनकृपापरेण, सद्धर्ममार्गप्रथनेन लोके ॥ ६ ॥ क्रमेणकृत्वानशनं विशुद्धं, पुरोत्तमे श्रीअजयादि मेरौ । आयुः क्षये स्वर्गमवापसम्यक्, यः श्रीगुरुर्ज्ञानसमादितात्मा ॥ ७ ॥ इत्थं स्तुतः श्रीजिनदत्तसूरिः, क्षमादिकल्याणसुपाठकेन । सूरीश्वरः सर्वगुणाकरोसौ, भव्यात्मना वांछितपूर्वकोऽस्तु ॥ ८ ॥

॥ इति श्री जिनदत्तसूरिअष्टकं समाप्तम् ॥

—:०:—

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ अथ स्नात्र पूजा ॥

॥ पाखण्डी गाथा ॥

चौतीसँ अतिशय जुउ। वचनातिशय संजुत्त ॥ सो परमेसर देखि भवि। सिंघासण संपत्त ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सिंहासन बैठा जगभाण। देखी भवियण गुणमणि खाण ॥ जे दीठें तुझ निम्मल झाण। लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि-मेलो आदि जिणन्दा ॥ तोराचरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणन्दा ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणन्दा।

(कुसुमांजलि हाथमें लेकर यह पढ़ते हुए चरणोंमें टीकी लगाना चाहिये) ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

जो निजगुण पज्जव रम्यो । तसु अनुभव ए गत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरङ्ग निरत्त ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जो निज आतम गुण आनन्दी । पुग्गल संगै जेह अफंदी ॥ जे परमेश्वर निज पद लीन । पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शान्ति जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो श्रीशान्ति जिणंदा ॥ (यह पढ़कर दोनों घुटनों पर टीकी लगाना चाहिये) ॥ २ ॥

॥ गाथा ॥

निम्मल नाण पयासकर । निम्मल गुण

सम्पन्न ॥ निम्मल धम्म उवएस कर । सो पर-
मप्पा धन्न ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

लोकालोक प्रकाश नाणी । भवि जन ता-
रण जेहनी वाणी । परमानन्द तणी नीसाणी ।
तसु भगतें मुझ मती ठहराणी ॥ कुसुमांजलि
मेलो नेमि जिणन्दा । तोरा चरण कमल चोवीस
पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस वैरागी चोवीस
जिणंदा ॥ कुसुमाँजलि मेलो श्रीनेमि जिणन्दा ॥
(यह पढ़कर दोनों हाथोंपर टीकी लगाना
चाहिये) ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

जे सिद्धा सिज्जन्ति जें। सिज्जिस्सन्ति अणंत ॥
जसु ओलम्बन ठविय मन । सो सेवो अरि-
हन्त ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

शिव सुख कारण जेह त्रिकालें । सम परि-

णामें जगत निहालें ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखावें । इन्द्रादिक जसु चरण पखालें ॥ कुसुमाँजलि मेलो पार्श्व जिणन्दा, तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमाँजलि मेलो श्री पार्श्व जिणन्दा ॥ (यह पढ़कर दोनों कन्धों पर टीकी लगाना चाहिये) ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥

सम्मदिट्ठी देसजय । साहु साहुणी सार ॥
आचारिज उवझाय मुणि । जो निम्मल आधार ॥५॥

॥ ढाल ॥

चौविह संघै जे मन धारयो । मोक्ष तणो कारण निरधारयो ॥ विविह कुसुम वर जात गहेवी । तसु चरणैं प्रणमन्त ठवेवी ॥ कुसुमाँजलि मेलो श्री वीर जिणन्दा, तोरा चरण कमल चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमाँजली मेलो श्री वीर

जिणन्दा ॥ (यह पढ़कर कपाल पर तिलक करना चाहिये) ॥ ५ ॥

॥ इति पाखण्डी गाथा ॥

॥ वस्तु ॥

सयल जिनवर सयल जिनवर नमिय मन रङ्ग कल्लाणक विह संथविय। करिय सुजस्स सुपवित्त सुन्दर। सय इक सत्तरि तित्थंकर। इक समै विहरन्त महियल। चवण समैं इकवीस जिण। जन्म समैं एकवीस। भत्तिय भावें पूजिया। करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

॥ इक दिन अच्चिरा हुलरावती ए देशी ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या। जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रिय सुख आसंसना। करि थानक वीसनी सेवना ॥ अति-राग प्रशस्त प्रभावता। मन भावना एहवी भावता ॥ सवि जीव करूं शासन रसी। इसी

भाव दया मन उल्लसी ॥ लहि परिणाम एहवुँ भलुँ । निपजावी जिनपद निरमलुँ ॥ आऊ बंध विचै इक भव करी । श्रद्धा संवेगथी थिर धरी तिहाँथी चविय लहै नर भव उदार । भरतें जिम ऐरवतेज सार । महा विदेह विजय प्रधान । मझ खंडै अवतरे जिन निधान ।

॥ ढाल ॥

पुण्यें सुपना ए देखें । मनमें हर्ष विशेषे ॥ गजवर उज्जल सुन्दर । निर्मल वृषभ मनोहर । निर्भय केसरी सींह । लखमी अतिह अबोह ॥ अनुपम फूलनी माला । निर्मल शशि सुकमाल ॥ तेज तरण अति दीपै । इन्द्र ध्वजा जग जीपै ॥ पूरण कलस पंडूर । पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमें रयणायर । देखे माताजी गुण सायर ॥ बारमें भुवन विमान । तेरमें रत्न निधान ॥ अग्नि शिखा निरधूम । देखें माताजी अनुपम ॥ हरखी

रायने भासें । राजा अर्थ प्रकाशें ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होस्यें पुत्र मनोहर ॥ इन्द्रादिक जसु नमस्यें । सकल मनोरथ फलस्यें ॥

॥ वस्तु ॥

पुण्य उदय पुण्य उदय ऊपना जिण नाह । माता तव रयणी समें देखि सुपन हरषंत जागिय । सुपन कही निज कंतने सुपन अरथ साँभलो सोभागिय । त्रिभुवन तिलक महा गुणी । होस्यें पुत्र निधान ॥ इन्द्रादिक जसु पय नमी । करस्यें सिद्ध विधान ॥

॥ ढाल चन्द्रा उल्लालानी ॥

सोहम पति आसन कंपियो । देई अवधें मन आणंदियो ॥ मुझ आतम निर्मल करण काज । भव जल तारण प्रगट्यो जिहाज ॥ भव अटवि पारग सत्थवाह । केवल नाणाइय अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकुर जेह ।

उलट्यो आषाढ मेह ॥ हरखै विकसैं तव रोम-
राय । वलयादिकमाँ निजतनु न माय ॥ सिंहा-
सनथी ऊठो सुरिंद । प्रणमन्तो जिण आनन्द
कन्द ॥ सग अड़पय पमुहा आवि तत्थ । करि
अञ्जलि प्रणमिय मत्थ सत्थ । मुख भाखें ऐ
खिण आज सार । तियलोय पहु दीठो उदार ॥
रे रे नि सुणों सुरलोय देव । विषयानल तापित
तनु समेव ॥ तसु शान्ति करण जलधर
समान । मिथ्या विष चूरण गरुड़वान ॥ ते देव
सकल तारण समत्थ । प्रगट्यो तसु प्रणमी
हुई सनत्थ ॥ इस जम्पी शक्रस्तव करेवि । तब
देव देवि हरखै सुणेवि गावे तब रम्भा गीत
गान । सुर लोक हुवो मंगल निधान ॥ नर
खेत्रें आरज वंश ठाम । जिनराज वधैं सुर हर्ष
धाम ॥ पिता माता घरे उच्छव अलेख । जिन
शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक
हर्ष संग । संयम अरथी जनने उमंग । शुभ

वेला लगने तीर्थ नाथ । जनम्यां इन्द्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पाम्यां त्रिभुवन सर्व जीव । वधाई वधाई थई अतीव ॥ (फूल और चाँवलोंसे वधाना) पीछे :—

(यहाँपर चैत्यवन्दन करना और धूप देना)

॥ त्रोटक ॥

श्रीशांति जिननो कलश कहिसुँ ए देशी ॥

श्रीतीर्थ पतिनों कलश मज्जन गाइये सुखकार । नर खेत्त मंडन दुह विहण्डन भविक मन आधार ॥ तिहाँ राव राणां हर्ष उच्छव थयो जग जय कार । दिसि कुमरि अवधि विशेष जाणी लह्यो हर्ष अपार ॥ निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद । जिन जननि पासें आवि पोंहती गहगहती आणन्द ॥ माय तैं जिन राज जाये शचि वधायो र अम्म जम्म निम्मल करण कारण करिस

कुसुम ॥ तिहाँ भूमि शोधन दीप दर्पण वाय विंजण धार । तिहाँ करिय केदली गेह जिनवर जननी मज्जन कार ॥ वर राखड़ी जिन पाणि बाँधी दियें इम आसीस । जुग कोड़ कोड़ी चिरंजीवो धर्म दायक ईश ॥

॥ ढाल इक विसानी ॥

जग नायकजी त्रिभुवन जन हित कार ए । परमातमजी चिदानन्द घन सार ए ॥ जिन रयणीजी दश दिश उज्जलता धरै । शुभ लगनेजी ज्योतिष चक्रते संचरै ॥ जिन जनम्याजी जिन अवसर माता घरै । तिण अवसरजी इन्द्रासन पिण थरहरै ॥

॥ त्रोटक ॥

थरहरे आसन इन्द्र चिंतें कवण अवसर ए बण्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिही आनन्द ऊपन्यो ॥ निज सिद्ध सम्पत्ति

हेतु जिनवर जाणि भगते ऊमह्यो। विकसंत वदन प्रमोद वधतै देव नायक गहगह्यो ॥

॥ ढाल ॥

तव सुरपतिजी घंटा नाद करावए। सुर लोके जी घोषणा एह दिरावए ॥ नर खेत्रैजी जिनवर जन्म हुवो अछे। तसु भगतांजी सुरपति मन्दर गिर गछै ॥

॥ त्रोटक ॥

गछै मन्दर शिखर ऊपर भवन जीवन जिन तणों। जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि सुर गणों ॥ तुम शुद्ध समकित थास्यें निर्मल देवाधिदेव निहालतां। आपणा पातिक सर्व जास्यें नाथ चरण पखालतां ॥

॥ ढाल ॥

इम सांभलिजी सुरवर कोड़ी बहु मिली। जिन वन्दनजी मन्दर गिर साहमी चली ॥ सोहम

पतिजी जिन जननी घर आवियो । जिन माताजी वंदी स्वामि वधाविया ।

॥ त्रोटक ॥

वधाविया जिनवर हर्ष बहुलै धन्य हूं कृत पुण्य ए । त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पुत्र तुमचो मेरु मज्जन वर करी । उच्छंग तुमचै वलिय थापिस आतमाँ पुण्य भरी ॥

॥ ढाल ॥

सुर नायकजी जिन निज्ज कर कमलैं ठव्या। पाँचरूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विध जो तव बत्तीस आगल वहै । सुर कोड़ी जी जिन दरशनणें ऊमहै ॥

॥ त्रोटक ॥

सुर कोड़ कोड़ी नाचती वलि नाथ शुचि गुण गावती । अपछरा कोड़ी हाथ जोड़ी हाव

भाव दिखावती ॥ जय जयो तूँ जिनराज जग गुरु एम दे आसीस ए । अम त्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीशए ॥

॥ ढाल ॥

सुर गिरवरजी पाँडुक वनमें चिहु दिसें । गिरि शिल पर जी सिंहासन सासय वसे ॥ तिहाँ आणीजी शक्रे जिन खोले ग्रह्या । चउसठें जी तिहाँ सुरपति आवी रह्या ॥

॥ त्रोटक ॥

आविया सुरपति सर्व भगतें कलश श्रेणी बणावए । सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सर्व वस्तु अणावए । अच्चुयपति तिहाँ हुकुम कीनो देव कोड़ा कोड़िनें । जिन मज्जनारथ नीर लाओ सवे सुर कर जोड़िनें ॥ (जलका कलश लेकर खड़ा रहे और नीचेकी ढाल पढ़े ।

॥ ढाल ॥

॥ शांतिनें कारणें इन्द्र कलशी भरै ए देशी ॥

आत्म साधन रसी देवकोड़ी हसी । उल्ल-सीनें धसी खीर सागर दिसी ॥ पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई । तीर्थ जल अमल लेवा भणी ते गई ॥ जाति अड़ कलश करि सहस अठोत्तरा । छत्र चामर सिंहासणे शुभ-तरा ॥ उपगरण पुष्फ चंगेरि पमुहा सवें । आगमें भासिया तेम आणि ठवें ॥ तीर्थ जल भरिय करि कलश करि देवता । गाव्रता भावता धर्म उन्नतिरता ॥ तिरिय नर अमरनें हर्ष उप-जावता । धन्य अम शक्ति शुचि भक्ति इम भावता ॥ समकितैं बीज निज आत्म आरोपता । कलश पाणी मिसै भक्ति जल सींचता ॥ मेरु सिहरोवरे सर्व आव्या वही । शक्र उच्छङ्ग जिन देखि मन गहगही ॥

॥ गाथा ॥

हंहो देवा अणाई कालो। अदिट्ठपुव्वो तिलोय तारण। तिलोय बंधु मिच्छत मोह विद्धंसणो। अणाइतिह्नाविणासणो देवाहि-देवो दिट्ठव्वो दिट्ठव्वो हियकामेहिं॥

॥ ढाल ॥

एम पभणंत वण भुवन जोईसरा। देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा॥ केवि कप्पट्ठिया केवि मित्ताणुगा। केवि वर रमण वयणेण अइ उच्छुगा॥

॥ वस्तु ॥

तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इन्द्र आदेश। कर जोड़ी सब देवगण लेइ कलश आदेश पामिय। अद्भुत रूप सरूप जुय कवण एह पुच्छंत सामिय। इन्द्र कहे जग तारणो पारग अम्ह परमेस। दायक नायक धर्मनिधि करिये तसु अभिषेक॥ (जलकी थोड़ी धारा देवे)

॥ ढाल ॥

॥ तीर्थ कमलवर उदक भरीनें पुष्कर सागर आवै ए देशी ॥

पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगैं नामैं । आतम निर्मल भाव करंतां, वधतें शुभ परिणामैं ॥ अच्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत । सामानिक इन्द्राणी पमुहा, इम अभिषेक करंत ॥ पू० ॥

॥ गाथा ॥

तव ईशाण सुरिन्दो, सक्कं पभणेइ करिस सुपासाउ। तुम अंके महनाहो, खिणमित्तं अम्ह अप्पेह ॥ ता सक्किन्दो पभणइ, साहम्मि वच्छलम्मि बहुलाहो । आणा एवं तेणं, गिन्हइ होउ कयत्था भो ॥ (सभी कलशों से स्नान करावें)

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषभ रूप करि न्हवण करे

प्रभु अंगै। करिय विलेपन पुष्फमाल ठवि वर आभरण अभंगै ॥ सो० १ ॥ तव सुरवर बहु जय जय रव कर निश्चै धरि आणन्द। मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यों भांजस्युं हि भव बन्ध ॥ सो० २ ॥ कोड़ बत्तीस सावन्न उवारी वाजंतै वरनाद। सुरपति संघ अमर श्री प्रभुनें जननीनें सुप्रसाद। आणी थापी एम पयंपे अम्ह निस्तरिया आज। पुत्र तुमारो धणिय हमारो तारण तरण जिहाज ॥ सो० ३ ॥ मात जतन करि राखज्यो एहनें तुम सुत हम आधार। सुरपति भक्ति सहित नन्दीश्वर करै जिन भक्ति उदार ॥ सो० ४ ॥ निय निय कप्प गया सहु निज्जर कहता प्रभु गुण सार। दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ५ ॥ खरतर गच्छ जिण आणा रंगी राज सागर उवझाय। ज्ञान धर्म दीपचन्द सुपाठक सुगुरु तणें सुपसाय ॥ देवचन्द निज भक्तें गायो

जन्म महोच्छव छंद । बोधबीज अंकुरो उलस्यो संघ सकल आणंद ॥ सो० ६ ॥ इति ॥

॥ राग वेलावल ॥

इम पूजा भगतें करो, आतम हित काज । तजिय विभव निज भावना, रमतां शिव राज ॥ इम० १ ॥ काल अनंतें जे हुआ, होस्यें जेह जिणंद । सपई श्रीमंधर प्रभु, केवल नाण दिणंद ॥ इम० २ ॥ जन्म महोच्छव इण परे, श्रावक रुचिवंत । विरचै जिन प्रतिमा तणों, अनुमोदन खंत ॥ इम० ३ ॥ देवचन्द जिन पूजना, करतां भव पार । जिन पड़िमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार ॥ इम० ॥ इति पदम् । इति स्नात्रम् ॥

अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ जल पूजा ॥

दुहा ॥ गंगा मागध क्षीरनिधि, औषध,

मिश्रित सार । कुसुमे वासित शुचि जलें, करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ॥ ढाल ॥ मणि कनकादिक अड़विध करि भरि कलस सफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसु नहिं दुरित प्रचार ॥ मेरु शिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण समान । करता वरता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥ २ ॥ (छंद) हर्ष भरि अपसरा वृन्द आवै । स्नात्र करि एम आसीस भावै । जिहाँ लगै सुरगिरी जंबुदीवो अमतणा नाथ जीवो तु जीवो ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ विमल केवल भासन-भास्करं, जगति जंतु महोदयकारणं । जिनवरं बहुमानजलौघतः शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमपरमात्माने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जल पूजा

जलसे न्हवण करावे ।

॥ अथ चन्दन पूजा ॥

दुहा ॥ बावना चंदन कुस कुमा । मृगमद नें घनसार ॥ जिन तनु लेपै तसु टले । मोह सन्ताप विकार ॥ १ ॥ ढाल ॥ सकल संताप निवारण तारण सहु भविचित्त । परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भविनित्त ॥ निज रूपें उपयोगी धारी जिन गुणगेह । भाव चन्दन सुह भावथी टालै दुरित अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिन तनु चरचतां सकल नाकी । कहै कुग्रह उष्णता आज थाकी ॥ सफल अनिमेषता आज म्हाँकी । भव्यता अम्ह तणी आज पाकी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ सकलमोहतमिस्रविनाशनं । परम शीतलभावयुतं जिनं ॥ विनय कुंकुमदर्शनचंदनः सहजतत्त्वविकाशकृतेर्च्चये ॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदन पूजा ॥ केसर चंदन चढ़ावे ॥

॥ अथ नवअंगी भाव पूजा ॥

दुहा ॥ पर उपगारी चरणयुग अनन्त शक्ति स्वयमेव । यातें प्रथम पूजिये, आतम अनुभव सेव (चरणोंमें टीकी) ॥ १ ॥ जानु पूजा दूसरी, समाधि भूमिका जान । आतम साधन ज्ञान ले, शुद्ध दशा पहिचान ॥ (गोडोंमें टीकी) ॥ २ ॥ कर पूजा जिन राजकी, दिये सम्वच्छरी दान । ते कर मुझ मस्तक ठवूँ पहुँचे पद निर्वाण ॥ (हाथोंमें टीकी) ॥ ३ ॥ भुजबल शक्ति जानकें, पूजा करूँ चित लाय । रागादिमल हटायके, आतम गुण दरशाय ॥ (कंधोंमें टीकी) ॥ ४ ॥ सिर पूजा जिनराजकी, लोक शिरोमणि भाव । चउगति गमन मिटायके, पंचम गति सम भाव ॥ (मस्तकमें टीकी) ॥५॥ लिलवट पूजा सार है, तिलक विधि विश्राम । वदन कमल वाणी सुनें, पहुँचे निज गुण धाम (ललाटमें टीकी) ॥ ६ ॥ कंठ पूजा है सातमी, वचनातिशय

बृन्द । सप्त भेद पयच्चिश श्रुत, अनुभव रसनो कन्द ॥ [कंठमें टीकी] ॥ ७ ॥ हृदय कमलनी पूजना, सदा वसो चितमाँह । गुण विवेक जागे सदा ज्ञान, कला घट छाय [हृदयमें टीकी] ॥८॥ नाभी मंडल पूजके, षोड़श दलको भाव । मन मधुकर मोही रह्यो, आनन्द घन हरषाय [नाभीमें टीकी] ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

दुहा ॥ जल भरि संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंत । ऋषभ चरण अंगूठवे, दायक भव-जाल अन्त ॥ १ ॥ जानु बले काउसग रह्या, विचरया देश विदेश । खड़ा २ केवल लह्या, पूजा जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दान । कर कंडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयूं दो अंश थी, देखो वीर अनन्त । पूजा बलें भवजल तरया, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ रत्नत्रय गुण ऊजली,

सकल सुगुण विश्राम । नाभि कमलनी पूजना, करता अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृदय कमल उपशम बलें, बाल्यो रागनें द्वेष । हेम दहै वन खंडनें, हृदय तिलोक संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देई देशना, कंठ विवर वरतूल । मधुर धुनी सुर नर सुनें, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थंकर पद पुण्य थी, त्रिभुवन जिन सेवंत । त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्ध शिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत । वसिया तिण कारण वही, शिर शिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नवतत्वना, तिम नव अंग जिणंद । पूजो बहु विध भाव थी, कहे सहु वीर मुनिन्द ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ पुष्प पूजा ॥

॥ दोहा ॥ शतपत्री वर मोगरा, चम्पक जाइ गुलाव । केतकी दमणो बोलसिरि, पूजो

जिन भरि छाब ॥ १ ॥ ढाल ॥ अमल अखण्डित विकसित सुभ सुमनी घन जाति, लाखिनो टोडर ठवो अंगी रचो बहुभाँति । गुण कुसुमें निज आतम मण्डित करवा भव्य, गुणरागी जड़त्यागी पुष्प चढ़ावो नव्य ॥ २ ॥ चाल ॥ जगधणी पूजतां विविध फूलै, सुरवरा ते गिणें क्षण अमूले । खन्ति धर मानवा जिनपद पूजै, तसुतणा पाप संताप धूजै ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ विकचनिर्मलशुद्धमनोरमैः विशदचेतनभावसमुद्भवैः । सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्वमयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति पुष्पपूजा ॥ पुष्प चढ़ावे ॥

॥ अथ धूप पूजा ॥

॥ २ ॥ कृष्णागर मृगमद तगर, अम्बर तुरक लोबान । मेल सुगन्ध घनसार घन, करो जिननें धूपदान ॥ १ ॥ ढाल ॥ धूपवटी जिम मह-

महे, तिम दहै पातिक वृन्द । आर्ति अनादिनी जावै, पावै मन आनन्द । जे जन पूजै धुपै, भव-कूपै फिर तेह । नावै पावै धुवघर, आवै सुक्ख अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिनघरे वासतां धूप पुरै, मिच्छत दुर्गन्धता जाई दूरै । धूप जिम सहज ऊर्द्ध गत स्वभावे, कारिका उच्चगति भाव पावै ॥३॥ श्लोक : ॥ सकलकर्ममहे धनदाहनं, विमलसंवर-भावसुधूपनं । अशुभपुद्गलसङ्गविवर्ज्जितं, जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्पितः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूप पूजा ॥ धुप अगरबत्ती खेवै ॥

॥ अथ दीप पूजा ॥

॥ दोहा ॥ मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करी घृत पूर । बत्ती सूत्र कसुंबनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ मंगल दीप वधावो गावो जिन गुणगीत, दो पयकी जिम आलिका मा-लिका मंगलनीत । दीपतणी शुभज्योती द्योतो

जिन मुखचन्द, निरखी हरखो भविजन जिम लहोपूर्णानन्दा ॥ २ ॥ चाल ॥ जिन गृहे दीप माला प्रकासैं, तेहथी तिमर अज्ञान नासें । निजघटै ज्ञानज्योती विकासैं, तेहथी जगतणा भाव भासैं ॥ ३ ॥ श्लोक—भविकनिर्म्मलबोधविकाशकं, जिनगृहे शुभदीपकदीपनं । सुगुणरागविशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृते जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ इति दीप पूजा ॥ मंगलदीप चढ़ावे ।

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥ अक्षत २ पूरसूँ, जे जिन आगे सार । स्वस्तिक रचतां विस्तरै, निजगुण भर विस्तार ॥ १ ॥ ढाल ॥ उज्जल अमल अखण्डित मण्डित अक्षत चंग, पुञ्जत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावो रङ्ग । निज सत्तानें सन्मुख उन-

मुख भावे जेह, ज्ञानादिक गुणठावें भावे स्वस्तिक एह ॥ २ ॥ चाल ॥ स्वस्तिक पूरतां जिनप आगे, स्वस्ति श्री भद्र कल्याण जागै । जन्म जरा मरणादि अशुभ भागे, नियत शिव सम रहै तासु आगे ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ सकलमंगलकेलिनिकेतं, परममंगलभावमयंजिनं । श्रयति भव्यजना इति दर्शयन, दधतु नाथपुरोक्षतस्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥ इति अक्षत पूजा ॥ अखण्ड चावल चढ़ावे ।

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥ सरस शुचि पकवान बहु, शालि दालि घृतपूर । धरो नैवेद्य जिन आगलें, क्षुधा दोष तसु दूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ लपनश्री वर घेवर मधुनर मोतीचूर, सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदकपूर । साकर द्राख सीङ्घोड़ा भक्ति व्यञ्जन घृतमय, करो नैवेद्य जिन आगलें जिम मिलें

सुख अनवद्य ॥ २ ॥ चाल ॥ ढोवतां भोज्य पर भाव त्यागे, भविजना निज गुण भोज्य मांगे। अम्हभणि अम्हतणा सरूप भोज्य आपज्यो तातजी जगत पूज्य ॥ ३ ॥ श्लोक : ॥ सकल पुद्गलसङ्ग विवर्ज्जनं, सहजचेतन भावविलासकं। सरस भोजननव्यनिवेदनात्, परमनिर्वृत्तिभागमहं स्पृहे ॥१॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने०। नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥७॥ इति नैवेद्य मिठाई पकवान चढ़ावे ॥

॥ अथ फल पूजा ॥

॥ दोहा ॥ पक्व बीजोरु जिन करै, ठवतां शिवपद देइ। सरस मधुर रस फल गिणों, इह जिन भेट करेइ ॥ १ ॥ ढाल ॥ श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आँबा सार, अंजीर वंजीर दाड़िम करणा षट्बीज सफार। मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आनन्दित जेह, वर्ण गन्धादिक रमणीक बहुफल ढोवै तेह ॥ २ ॥ चाल ॥ फल

भर पूजतां जगत स्वामी, मनु जगति ते लहैं सफल पामी । सकल मनुष्येय गतिभेद रंगै, ध्यावतां फल समाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ कटुककर्मविपाकविनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढौकनं । वहति मोक्षफलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नीला फल प्रमुख चढ़ावे ॥ इति फलपुजा ॥

॥ अथ अर्घ पूजा ॥

॥ दोहा ॥ इम अड़विधि जिन पूजना, विरचै जे थिर चित्त । मानवभव सफलो करै, वाधै समकित वित्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ अगणित गुणमणि आगर नागर वन्दित पाय, श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञानसागर उवज्झाय । तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन, श्रीजिन पूजा गाई

जिनवाणी रसपीन ॥ २॥ चाल ॥ सम्वत गुण-युत अचल इन्दु, हर्ष भरी गाईयो श्रीजिनेन्दु । तासु फल सुकृत थी सकल प्राणी, लहै ज्ञान उद्योत धन शिव निसाणी ॥ ३ ॥ श्लोकः ॥ इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकल गुणनिधानं देवचन्द्रं स्तुवन्ति । प्रतिदिवसमनन्तं तत्वमुद्भासयन्ति, परमसहजरूपं मोक्षसौख्यं श्रयन्ति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । अर्घ यजामहे स्वाहा ॥ चार कोणोंमें धारा देवे । इति अर्घपूजा ॥

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूलाः सिंहासनोपरि मितस्नपनावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचन्दनगन्धधूपैः, कृत्वार्च्चनन्तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिनालङ्कारवस्त्रादिकं, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्

त्यातिभक्त्याद्दनः । नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृ तिकृते क्लेशाक्षयाकांक्षया ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने० । वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ वस्त्र चढ़ावे ॥ इति वस्त्रपूजा ॥

॥ अथ निमक उतारण पूजा ॥

अह पढिभग्गापसरं, पयाहिणं मुणिवयं करिऊणं । पड़ई सलूणत्तण लज्जियंच, लूणंहू अवहरन्ति ॥ १ ॥ पिक्खविणु मुह जिण वरह दीहर नयण सलूण । न्हावइ गुरु मच्छरु भरिय, जलण पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूण उतारिह जिणवरह, तिन्नि पयाहिणि देव । तड़ तड़ शब्द करन्तिये, विज्जा विज्जजलेण ॥ ३ ॥ जं जेण विज्जव थुई, जलेण तं तहइ अत्थसहस्य । जिनरूवा मच्छरेणवि, फुटइ लूणं तड़ तड़स्स ॥ ४ ॥ ए कही लूण अग्निशरण करै

पीछे लूण पाणी लेई, मुखें गाथा कहै ॥ गाथा ॥ सव्वत्रि मुणवइ जलविजल, तन्तह भमणइ पास । अहवि कयन्तस्स निम्मलउ, निग्गुण बुद्धि पयास ॥ ५ ॥ जलण अणें विण्ण जलणहि पास, भरवि कयज्जल भावहि पास । तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास, जिम जिय छटै भव दुहपास ॥ ६ ॥ जल निम्मल कर कमलेहि लेविणुं, सुरवर भावहि मुणिवईं सेवणु । पभणई जिनवर तुहपइ सरणं, भय तुट्टइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥ ७ ॥ ए कही लूण उतारी जल सरण कीजै ॥ इति निमक उतारण पूजा ॥

॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥

उन्नय पयय भत्तस, नियठाणे सण्ठिय कुणंतस्स । जिण पासै भमिय जणस्स, पिच्छ तुह हुयवहे पड़णं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो,

सरिसा सरिसेसु जेण रञ्चन्ति । सव्वन्नूण अपासे, जड़स्स भमणं न संकमणं ॥ २ ॥ अच्चन्त दुःकरं पिहु, हुयवह निवड़ेन जड़ेन कयं । आणा सव्वन्नूणं, न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ यह कहकर माला पहनावे ॥

॥ अथ छुटा फूल पूजा ॥

उवणेव मंगलेवो जिणाण मुहु लालि संवलिया । तित्थपवत्तम समई, तियसे विमुक्का कुसुमकुट्ठी ॥ १ ॥ यह कहकर प्रभुके सम्मुख फूल उछाले ॥

॥ प्रभातकी आरती ॥

जय जय आरती शान्ति तुमारी, तोरा चरण कमलकी मैं जाउँ बलिहारी ॥ टेर ॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा, शान्तिनाथ मुख पूनिम चन्दा ॥ जय० ॥ १ ॥ चालिस धनुष सोवनमय काया, मृग लांछन प्रभु चरण सुहाया

॥ जय० ॥ २ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पंचम सोहै, सोलम जिनवर जग सहु मोहै ॥ जय० ॥ ३ ॥ मंगल आरती मोरे किजे, जनम २ को लाहो लीजे ॥ जय ॥ ४ ॥ कर जोड़ी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमर पद पावै ॥ जय० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ संध्याकी आरती ॥

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपासकी, जय महाराजकी दीनदयाल की आरती किजै ॥ टेर ॥ चन्द सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपूज्य जिनराजकी ॥ जय० ॥ १ ॥ विमल अनन्त धर्म हितकारी, शांतिनाथ सुखकारकी ॥ जय० ॥ २ ॥ कुंथुनाथ अर मल्लि मुनि सुव्रत, नमि नमु सोवन कायकी ॥ जय० ॥ ॥ ३ ॥ नेमिनाथ प्रभु पार्श्व चिंतामणि, वर्द्धमान भव पारकी । जय० ॥ ४ ॥ कंचन आरती

बहुविधि सझकर, लीजै अंग उछाहकी ॥ जय० ५ ॥ सकल संघ मिल आरती करत हैं, आवागमन निवारकी ॥ जय० ॥ ६ ॥

॥ अथ चैत्य वंदनं ॥

श्रीजिनमन्दिरमें प्रवेश करते समय पहले "निस्सही ३" कहकर ३ प्रदक्षिणा देकर उचित स्थानपर अक्षतसे स्वस्तिक करके सन्मुख बैठकर मस्तक नीचा कर ३ बार नमस्कार करेः—

इच्छामि खमासमणो वंदिउँ जावणिज्जाए निस्सिहीआए मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥

इच्छकारेण संदिसह भगवन् चैत्य वंदन करूँ—यह कह दाहिने गोडेके सहारे बैठकर बांया गोड़ा ऊँचा कर हाथ जोड़ इस प्रकार चैत्यवन्दन करे ।

सकलकुशलवल्लीपुष्करावर्त्त मेघो, दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः । स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वनाथः ॥

जं किंचि नाम तित्थं सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिणबिम्बाइं ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ अथ शक्रस्तव ॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थंयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुण्डरीआणं पुरिसवरगन्धहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहिआणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरीसीणं सिवमयलमरुअमणन्तमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं णमोजिणाणं जियभयाणं जे अ अईआ सिद्धा जे भविस्संति अणागए काले संपइ अ वट्टमाणा

सव्वे तिविहेण वन्दामि ॥ १ ॥ जावन्ति चेइ-
आइं उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए य सव्वाइं-
ताइं वंदे इह संतो तत्थसंताइं ॥ २ ॥ इच्छा-
कारेण संदिसह भगवन् जावंति केवि साहू,
भरहे रवय महाविदेहे अ सव्वेसि तेसिं पणओ
तिविहेण तिदण्डविरिआणं ॥ १ ॥ नमोऽर्हत्सि-
द्धाचार्योपाध्यायसर्व्वसाधुभ्यः ॥ उवसग्गहरं
पासं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहरवि-
सनिन्नासं मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विस-
हरफुलिंगमंतं कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स ग्गहरोगमारी दुट्ठजरा जन्ति उवसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो तुज्झ पणामोवि बहुफलो
होइ । नरतिरिएसुवि जीवापावंति न दुक्ख दो-
हग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे चिन्तामणिकप्प-
पायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं जीवा अयरा-
मरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस भत्ति-

ब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्जबोहिं भवे भवे पास जिणचन्द ॥ ५ ॥

यहाँ स्तुति, स्तवनादि करे; पीछे मस्तकमें अंजलि कर कहे :—

जय वीयराय जगगुरू होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठ-फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरूद्धच्चाओ गुरूजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरूजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वदणवत्तिआए पूअणवत्तिआऐ सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरूवसग्गवत्तिआए सिद्धाए मेहाए धिईऐ धारणाऐ अणुप्पेहाऐ वद्धमाणीऐ ठासि काउसग्गं ॥ (पीछे खड़े होकर कहना)

अन्नत्थऊससिऐणं नीससिऐणं खासिऐणं छीऐणं जंभाइऐणं उड्डुऐणं वायनिसग्गेणं भमलिऐ पित्तमुच्छाऐ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहु-

मेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

एक नवकारका काउसग्ग करना ॥ पश्चात् थुई बोलना :—

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं । शांति तवो नेमि जिणं मुणिंदं । पासं पयासं सुगणिक्क ठाणं । भत्तीई वंदे सिरि वद्धमाणं ॥

॥ पुनः ॥

अष्टापद श्री आदि जिनवर वीर पावापुरवरू । वासुपूज्य चंपानगर सीधा नेम रेवा गिरिवरू समेतशिखरे वीस जिनवर मुक्ति पहुँता मुनिवरू । चउवीस जिनवर तिहाँ वंदु सयल संघे.

॥ मंगल ॥

॥ राग—धन्याश्री ॥

बाजत रंग बधाई नगरवामें बा० ॥ टेर ॥ जय जयकार भयो जिनशासन, वीर जिणंदकी दुहाई ॥ नग० ॥ बा० १ ॥ सब सखियन मिल मंगल गावे, मोतियन चोक पुराई ॥ नग० बा० ॥ केतकी चम्पो फूल मंगावो, जिनजीकी अंगिया रचाई ॥ नग० ॥ बा० ३ ॥ न्यायसागर प्रभु चरण कमलसे, दिन २ ज्योति सवाई ॥ नग० ॥ बा० ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

बाजत आज बधाई, या पुर देखोरी यहाँ आई ॥ बा० ॥ अश्वसेन वामा देवी घर पुत्र भये सुखदाई, घर २ नारी मंगल गावें फूले अंग न समाई ॥ या० १ ॥ ढोल दमामा वीन बांसुरी वाजे सुन हरखाई, जिनके जन्म समै करनेको

इन्द्र शची युत आई ॥ या० २ ॥ मेरु शिखर ले जाये न्व्हनकुं फेर बनारस जाई, सौंप नृपतिको पास नाम धरि तांडवनृत्य कराई ॥ या० ॥ ३ ॥ किये निहाल दान दे याचक मान सकल पहराई, चिरंजीव रहो बाल हितकारी सब जीवन सुखदाई ॥ या० ४ ॥

॥ प्रभाती ॥

मेरु शिखर न्हरावे हो सुरपति ॥ मेरु ॥ ॥ टेर ॥ जन्मकाल जिनवरजीको जानी, पंचरूप करी आवै हो ॥ सु० मे० १ ॥ क्षीर समुद्र तर्थोदिक आणी, स्नात्र करी गुण गावैं हो ॥ सु० मे० २ ॥ रत्न प्रमुख अड़जातीना कलशा. ओषधि चूरन मिलावै हो ॥ सु० मे० ३ ॥ जिन प्रतिमाको न्हवन करीने, बोध बीज मन आवै हो ॥ सु० मे० ४ ॥ अनुक्रम गुणरत्नाकर फरसी, जिन उत्तम पद पावै हो ॥ सु० मे० ५ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

जागो २ सिद्धारथके नन्दन, तुम मुख देखत हर्ष अपार ॥ जा० ॥ प्रात समय तेरो मुख देखन, आये सुर नर थारे द्वार ॥ जा० ॥ १ ॥ दिनकर किरण प्रगट भये भूधर, संकुचित कमलिनी मिटियो अंधार । तम चर सोर सुनावत चिहुँ दिश, धेनु सहित बछवन ही बेहाल ॥ ॥ जा० २ ॥ सुर बनिता संजोग आरती, ऊभी गावें मंगलाचार । संग सखी आंगनमें ठाढी उठो मेरे जीवन प्राण आधार ॥ जा० ३ ॥ माता वचन सुनत ही जाग्यो, सुखदायक बर्द्धमान कुमार । हरषचन्द प्रभु बदन विलोकत, तीन लोक भये जय जय कार ॥ जागो० ४ ॥

॥ भैरवी ॥

आज मेरो अङ्ग अङ्ग हुलसायो, पावापुर क्षेत्र लगायो ॥ आ० ॥ या थानक ते वीर धीरने

कर्म कलंक नशायो । कातिक मास अमावसके दिन शिवपुर राज लहायो ॥ आ० १ ॥ जहां सुरपति निर्वाण कल्याणक पूजा करने आयो । जल चंदन अक्षत पुष्पादिक वसुविधि द्रव्य चढ़ायो ॥ आ० २ ॥ तदपुरी प्रकाश रूप-मणि वृंद दीप झलकायो । सब सुर इन्द्र मिल मोक्ष कल्याणक करि फिर स्वर्ग सिधायो ॥ ॥ आ० ३ ॥ लखके श्री निर्वाण भूमि हम वंदत मन वच कायो । सेवक तारो अर्ज करत है बार बार सिर नायो ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

॥ कजरी ॥

अब मोहे तारो पारशनाथ अब० ॥ टेर ॥ अश्वसेन वामाजीके नन्दन, तीन भुवनके नाथ ॥ अब० १ ॥ पोस वदी दसमी दिन जायो, दिशी कुमरी संग साथ ॥ अब० २ ॥ सेवककी अरजी पर मरजी, लज्जा तुम्हारे हाथ ॥ अब० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

अब मोहे तारो वीर जिनन्द ॥अव०॥टेर॥ सिद्धारथ त्रिशलाजीके नन्दन वर्द्धमान जिन चन्द ॥ अब० १ ॥ शासन नायक शिव-सुख दायक श्री जिन आनन्द कन्द ॥ अब० २ ॥ सुन्दर सूरत मोहन मूरत देखत होतआनन्द ॥ अब० ३ ॥ बे कर जोड़ी अरज करत हैं चा-कर माणिकचन्द ॥ अब० ॥ इति ॥

ठुमरी।

महावीर तोरी समवसरणकी रे मैं जांऊ बलिहारी, बलिहारी जाऊँ वारी ॥ महा० ॥ टेर ॥ त्रण गढ़ ऊपर रे, तख्त विराजे रे, बैठी छै प-र्षदा बारे, बलिहारी जाऊँ वारी ॥ महा० १ ॥ वाणी योजन रे, सहूने सांभल रे, तारया छै नर नै नारी । बलिहारी जाऊँ वारी ॥ महा० ॥ ॥ २ ॥ आनन्द घर प्रभु रे, इन परि बोले रे, आवा छै गमन निवारी, बलिहारी जाऊँ वारी ॥ महा० ३ ॥ इति ॥

॥ देशी ॥

सखिरी पावापुर महावीर हाँ जी चलो वंदिये ॥ हांजी० ॥ टेर ॥ सुन्दर जल भर सरोवर सोहै, मानों गंगा नीर ॥ हांजी० १ ॥ जल बिच कमल कमल बिच देहरा, बिच विराजे महावीर ॥ हांजी० २ ॥ सोनेकी झारी गंगाजल पानी, चरण पखालू महावीर ॥ हाँजी ३ ॥ समोसरणमें सब मिल आये, बोलो जय जय वीर ॥ हांजी० ४ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

पावापुरमें स्वामी, भेटया वीर जिनन्दरी ॥ पा० ॥ टेर ॥ सिद्धारथ कुल कमल प्रकाशक, उदयो ज्ञान दिनन्दरी ॥ पा० १ ॥ कोटिक भान समान अंग छवि, आनन्दरा कन्दरी ॥ पा० २ ॥ पद पङ्कज निसिवासर प्रभुके, सेवे चौसठ इन्दरी ॥ पा० ३ ॥ दीन दयाल दयानिधि साहब, चोविसमां जिन चन्दरी ॥ पा० ४ ॥

चरण कमलकी मैं सेव। चाहूँ हर्ष धरि हर्ष-चन्दरी ॥ पा० ५ ॥ इति ॥

॥ बेहाग ॥

वीर प्रभु हमको पार उतारो, मैं तो आयो सुजस सुन थारो ॥ वी० ॥ सिद्धारथके कुल रवि उदयो, त्रिसला मात उदारो । कंचन वरण सुकोमल जाको, चन्द वदन मनोहारो ॥ वीर ० ॥ सुर नर इन्द्र नरेन्द्र सबै मिल, पूजत चरण हजारो । अधम उधारण नाम श्रवण सुनि, उमग्यो प्रेम हमारो ॥ वी० २ ॥ अष्ट कर्म रिपु हमने सतायो, करिहूँ नाथ पुकारो । तीन लोकमें राज तुमारो, विनती आज सुधारो ॥ वी० ३ ॥ भव दधि राह चलत कुमतीगण पकड़्यो हाथ हमारो । चार योधा मिल मोकूं बिगाड़्यो दखल न मानें तिहारो ॥ वी० ४ ॥ मन दुख दूर करो सुख पूरो, गाऊँगो सुजस तुमारो । कपूरचन्द जिनवर सुख दे-

ल्यो, धन धन भाग्य हमारो ॥ वी० ५ ॥ इति ॥

जगतमें कौन किसीका मीत ॥ ज० ॥ मात तात और जात सजनसे, काहू कूं रहत निचित ॥ ज० १ ॥ सबही अपने स्वारथके हैं, परमारथ नहिं प्रीत ॥ ज० २ ॥ स्वारथ बिन सगो नहीं होसी, मिथ्या मनमें चीत ॥ ज० ३ ॥ उठ चलेगो आप अकेले, तुही सुं सुचित ॥ ज० ४ ॥ को नहीं तेरो तु नहीं किसको, एह अनादि रीत ॥ ज० ५ ॥ तो ते एक भगवान भजनकी, राखो मनमां नीत ॥ ज० ६॥ ज्ञानसार कहे ए धन्याश्री, गावो अनादि गीत ॥ ज० ७ ॥ इति ॥

॥ गजल ॥

तूही जिनन्द चन्द मेरी आपदा हरो। कर पास आस पूर सुख संपदा करो ॥ तू० ॥ मैं नाथ तोय जानके सरण तो पड़्यो ।मैं हुं अज्ञान दीन सिर हाथ तो धरो ॥ तू० १ ॥ कर

कहर दूर महर कर कर्म कुं हटा। कर पार तार वेग तीय रात दिन रटा ॥ तू० २ ॥ दर्श तेरो देख पाप पुंज तो घटा। अलाभका जो सोदा खुद आपसे पटा ॥ तू० ३ ॥ जो जानो आप आपको निगाह तो करो ॥ तू० ४ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

महाराज शरण तुमसे लागी, तुमसे लागी बनता रागी ॥ म० ॥ टेर ॥ क्षण भंगुर छै माया जगतनी, मांगूं शरण हूं ते त्यागी ॥ म० ॥ १ ॥ सुन्दर उपदेश अमृत पीता, नाण उदय बीज जो जागी ॥ म० २ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

तुम बिना और न जाचूं। जिनन्दा प्रभु ॥ तु० ॥ मै तेरे मन निश्चय कीनो, एमा कुछ नहीं काचूं ॥ जि० तु० १ ॥ तुम चरण कमल षटपद मन मेरो, अनुभव रस भरी चाखूं। अन्तरंग अमृत रस चाखो, एह वचन मन

साचूं ॥ जि० तु० २ ॥ जस प्रभु ध्याओ, महा-रस पायो और २ से नहिं राचूं । अन्तरङ्ग फरस्यो, दरशन तेरो । तुझ गुण रस संग माचूं ॥ जि० तु० ३ ॥ इति ॥

॥ रेखता ॥

अर्जी सुनो जिनराज जी, तुम दिल लगाय के । दोनों मिलाकर दस्त, मैं कहता सुनायके ॥ अ० ॥ टेर ॥ जेवर जो मेरा सिरका, कुमतिने ठग लिया । उसके सिवाय नरकमें, पेटके है जायके ॥ अ० १ ॥ मुशकिल करो आसान ए, जिनराज तु मेरा । लेता हूं तेरा नाम मैं, दुचि-धा हटायके ॥ अ० २ ॥ छूटेंगे कर्मफंदसे, मुझ-को यकीन है । दर्शन करेंगे आपके, मन्दिरमें आयके ॥ अ० ३ ॥ ले जफरान मुश्क, और सं-दल घसेंगे हम । पूजों तुमारे कदमको, गरदन झुकायके ॥ अ० ४ ॥ ताजा अनेक रंगके, लावेंगे फूल हम । प्रभुको पहनावेंगे, जेवर गुंथायके ॥

॥ अ० ५ ॥ शिवचन्द कहे इजावसे, मानिन्द लोहेके हम । लोहेमे कर कंचन कदम, पारस बैठायके ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ठुमरी ॥

शान्ति करो महावीर जिनेश्वर, कोटिक कष्ट हरो परमेश्वर ॥ शां ॥ पूरण ब्रह्म परम पद धारक, वीतराग जगदीश विश्वेश्वर ॥ शां० ॥ ॥ १ ॥ अगम अगोचर देव निरञ्जन, अघमी चन जगनाथ तारेश्वर ॥ शां० २ ॥ भव आताप निवारक जाणी, शरण आयो तारो दानेश्वर ॥ शां० ३ ॥ कुमुद चन्द्रके निज अन्तरजामी, शिव कर्त्ता महावीर बालेश्वर ॥ शां० ४ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

(अरे हारे) गावो २ खुसीसे गावो सभी गुण पार्श्व प्रभु महाराजके ॥ गा० टेर ॥ हिल मिलके गावो सब खुसियाँ मनाओ, आये हैं दिल बहारके ॥ गा० १ ॥ पूजन कराओ और

प्रेम चढ़ाओ, नैना दरसते दीदारके ॥ गा० २ ॥ भेटो चरण और लेलो शरणको, चरण पड़ो करतारके ॥ गा० ३ ॥ तन मनको वागे और धनको निसारो, कहता शियल पुकारके ॥ गा० ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ख्याल ॥

महावीर स्वामी, आप विराजो चन्दन चौकमें (बादल महलमें) ॥ म० ॥ दूर देशसे शिखरकी दीखे, शिखरकी छवि न्यारी । हाथी घोड़ा रथ पालकी, मनमें बहुत हुसियारीजी ॥ म० १ ॥ दूर देशसे आवे यात्री, पूजा आन रचावे । अष्ट द्रव्य पूजामें लावे, मन वंछित फल पावेजी ॥ म० २ ॥ थारो सेवक अरज करेछे, सुण ज्यों महावीर स्वामी । मोपें किरपा ऐसी कीजें, मोक्ष निशानीजी ॥ म० ३ ॥ इति ॥

॥ देशी ॥

(म्हारा) अजित जिनन्द प्रीतड़ी, मु

मुझे न गमे हो वीजानो संगके ॥ अजित० टेर ॥ मालती फूलें मोहियो, किम बैसे हो बाँवल तरु भृंग के ॥ अ० १ ॥ गंगा जलमां जे रम्याँ किम छिल्लर हो रति पामें मरालके ॥ अ० २ ॥ सरव जलधर विना नवि, चाहे तो जग चातक बालके ॥ अ० ३ ॥ कोकिल कल कूजित करे, पामी मंजरी हो पंजरी सहकारके ॥ अ० ४ ॥ ओछा तरुवर नवि गमें, गिरुआ सुं हो होय गुणनो पारके ॥ अ० ५ ॥ कमलिनी दिन कर कर ग्रहे, वलि कुमुदिनी हो धरें चन्द्र सूँ प्रीतके ॥ अ० ६ ॥ गौरी गिरीश गिरिधर बिना नवि चाहे हो कमला निज चित्तके ॥ अ० ७ ॥ तिम प्रभु सूं मुझ मन रम्युं, बीजा सूँ हो नवि आवै दायके ॥ अ० ॥ श्री नय विजय विबुध तणो वाचक यश हो नित २ गुण गायके ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

भव्य नित पीजो घीधारी। जिन वाणी सुधारस जानके नित्य पीजो घीधारी ॥ टेर ॥ वीर मुखारविन्दसे प्रगटी, जन्म जरा गति टारी। गौतमादिक उर घर व्यापी, यह परम सुरुचि करतारी ॥ भव्य० ॥ सलिल समान कलिल मल भंजन, वर्धमान रंजन हारी। भंजन विभ्रम धूल प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी ॥ भव्य नित्य १ ॥ कल्याण तरु उपवन धरनी, यह तारण भव जल नारी, बन्ध विदारण पैनी छैनी, मुक्ति निसेनी सम्हारी ॥ भव्य० २ ॥ स्वपर स्वरूप प्रकाशन कुं यह, भानु कला अविकारी, मुनि मन कुमुदिनी मोदन शशि भी सा सुख सुमनस वारी ॥ भव्य० ३ ॥ जाकूं सेवत सेवत निज पद, नशत अविद्या सारी। तीन लोक पद पूजत जाके, जानत जग हितकारी ॥ भव्य ४ ॥ कोटि जीव सम महिमा

जाके, कह न सके पदधारी । आनन्द घन प्रभु केस कहे यह, अधम उधारण हारी ॥ भ०य० ॥ ॥ ५ इति ॥

॥ २४ तीर्थंकरोंके लांछनका स्तवन ॥

चरणन चिन्ह चितारो चितधर । जिन वंदन चौवीस करो ॥ टेर ॥ ऋषभ वृषम गज अजितनाथके संभवके पग वाजी सरो । कपि अभिनन्द कौंच सुमतिके, पद्म २ के पाय सरो ॥ जि० १ ॥ स्वस्तिक सुपारस चन्द २ के, पुष्पदंतके मच्छ सरो । सुर तरु शीतल चरण कमल, श्रेयांस गेड़ा सोपाय सरो ॥ जि० २ ॥ मगर बासुपूज्य वराह विमलके, स्येन अनन्तके पाय सरो । धर्मवज्रांकुश शांति हरिण युत, कुंथ अजा अर मीन सरो ॥ जि० ३ ॥ कलश मल्लि, कूर्म मुनि सुव्रत, नमि कमल शतपत्र सरो । नेमि शंख फणि पार्श्व वीर हरि, लखि आनन्द करो ॥ जि० ५ ॥ इति ॥

॥ छन्द ॥

उपम कनकदेव, उपम न काहू तेव चूल हेम तेज जेम, ज्योति मोती नीरकी । लंछन हजार आठ, कम्म दल दीना काट, योजन गमन रूप, वाणी एक वीर की ॥ १ ॥ पत्थर फटिक मांहि नाउ पें विराजमान, वचन प्रकाशे प्रभु, वुंट जैसे क्षीर की । तरण तारण देव, सुरपति सारे सेव, ऐसी महिमा लोकमें, विराजे महावीर की ॥ २ ॥ चौवीसमां महावीर, सूरविर महाधीर, वाणी मीठी दूध क्षीर सिद्धारथ नन्द है । नाग जैसी नार जाने, घटमें वैराग आने, योग लिया जग मांहि छोड़ा मोह फन्द है ॥ ३ ॥ चौदह हजार संत, नार दिया भगवंत, कर्मोका किया अन्त, पाम्या सुख कन्द है । भणों मुनिचन्द भाण, सुनों भविक गण, महावीर किया ध्यान उपजे आनन्द है ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ निर्वाणजीका स्तवन ॥

वीर जिन सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे। हिव इण भरतमां कुण करिस्यै उपगारो रे ॥ वी० १ ॥ मारग दर्शक मोक्षनो रे, केवल धान निधान । भाव दया सागर प्रभुरे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ वी० २ ॥ नाथ बिहूणी सेणा ज्युं रे, वीर विहूणोरे संघ। साधे कुण अधारथीरे, परमानन्द अभंगोरे ॥ वी० ३ ॥ मात विहुणा बालुआरे, उरह पहर अथड़ाय। वीर विहूणा भवि जनोरे, आकुल व्याकुल थाय रे ॥ वि० ४ ॥ संशय छेदक वीरनोरे, विरह ते केम खमाय। जे देखि चित्त उल्लसेरे, ते बिन किम रहीवायोरे॥ वी० ५ ॥ निर्ज्जा किम भव समुद्रनो रे, भव अड़वी सत्थवाह। ते परमेश्वर विन मिल्यारे, किम बाधै उच्छाहोरे ॥ वी० ६ ॥ बीर थका पिण सूत्र नोरे, हुं तो परम आधार। इहाँ श्रत आधार छैरे, अथवा जिन मु-

सारोरे ॥ वी० ७ ॥ इण काल सर्व जीवनेरे, आगम थी आनन्द । ध्यावो सेवो भविजनारे, जिण पड़िमा सुख कन्दोरे ॥ वी० ८ ॥ गण धर आचारज मुनिरे, सहू ने इण विधि सिद्ध । भव भव आगम संगथीरे, देवचन्द पद लीधो रे ॥ वी० ९ ॥ इति ॥

॥ निर्वाणजीकी आरती ॥

जय जगदीश्वर अति अलवेसर । वीर प्रभुराया । पतित ऊधारण भव भय भंजण बोधवीज दाया ॥ (जय २ जिन राया । आ-रति करूं मन भाया । होय कंचन काया) ज० ॥ १ ॥ क्षत्रीकुण्ड नगर अति सुन्दर । सिद्धारथ राय । सुदि आषाढ़ छठके दिवसे । त्रिशला कुक्ष आया ॥ ज० २ ॥ चवद सुपन देखी अति उत्तम । निज प्रीतम भाषे । अरथ भेद सहु निश्चै करने । निजगुण रस चाखे ॥ ज० ३ ॥ चैत्र सुदि तेरस दिन उत्तम । सहु ग्रह उच्च

पावे । जन्म देई दिश कुमरी सहुना आसन कंपावे ॥ ज० ४ ॥ उच्छव कर जावे निज थानक इंद्र सहु आवै । मेरु शिखर पर स्नात्र महोच्छव करि आनन्द पावै ॥ ज० ५ ॥ वसुधारा वृष्टि कर सहु सुर । निज थानक जावै । सिद्धारथ करे जन्म महोच्छव । अचरज सहु पावै ॥ ज० ६ ॥ कंचन बरण तेज अति दीपत, हरि लञ्छन छाजै । कुल इक्ष्वाकु अङ्ग सहु लक्षण । शशी ज्युं मुख राजै ॥ ज० ७ ॥ दान सम्वच्छर दे प्रभु लेवै चारित्र सुखदाई । मार्गशीष दशमी वदी पक्षै । उत्तम तरु पाई ॥ ज० ८ ॥ बार वरश छद्मस्थ पणामें । दुक्कर तप पालै ॥ माधव सुद दशमीके दिनकुं । दोष सहु टालै ॥ ज० ९ ॥ केवल पाय सबी सुर संगे । पावापुर आवै । गुणगण लंकृत देशनां देके । सङ्घ सहु पावै । ज० १० ॥ भूमंडल [illegible]च बहुत जीवकं अविचल सुख देवै । नर

सुर इन्द्र सभी मिल पूजे । जगमें जस लेवें ॥ ज० ११ ॥ चरम चोमाशि पावापूरि करिके । अन्त समय जाणो । हस्ति पालकी शुक्र शालमें । सोल पहर वाणी ॥ ज० १२ ॥ पर्यंकासन छठ तपस्या । एक चित्त गुण धामी । कार्तिक कृष्ण अमावसके दिन । शिव कमला पामी ॥ ज० १३ ॥ इन्द्रादिक निर्वाण महोच्छव, करि प्रभु गुण गावें । देव मुखें गणधर गुरु गौतम सुणनें पछतावें ॥ ज० १४ ॥ वीतराग गुण मनमें धारी, अनित्य भाव भावें । केवल ज्ञान प्रकट हुय ततखिण । सुर नर गुण गावें ॥ ज० १५ ॥ पञ्च कल्याणक शासन पतिकी । आरति इर्यों गावें । शिवसुख लक्ष्मी प्रधान मिलें जब । मोहन गुण पावें ॥ ज० १६ ॥ इति पञ्च कल्याणक आरती संपूर्णम् ॥

॥ श्रीचक्रेश्वरीकी आरती ॥

जय जय जिनपद सेवन कारक, जय जय

जगदंबे ॥ ए आकणी । अहनिशि तुझ पद समरन, दिल बिच ध्यान धरे ॥ जय० १ ॥ भविजन वाञ्छित पूरन सुरतरु, चक्रेश्वरी अम्बे ॥ ॥ जय० २ ॥ वसु भुज शोभित कनक छवी तनु, सेवित सुर वन्दे ॥ जय० ३ ॥ पंचानन तिम खगपति वाहन, आयुध हस्त धरे ॥ जय० ॥ ४ ॥ ऋद्धि वृद्धि नित प्रति सेवक आपे, आनन्द संघ धरे ॥ जय० ५ ॥ इति ॥

॥ श्री यक्षराजकी आरती ॥

जय जय ऋषभ पदाम्बुज सेवक, जय जय यक्षराया, भविजन सुखदाया ॥ ज० ॥ कामगवी जिम वंछितदायक, कंचन वरण सुहाया ॥ ज० १ ॥ संकट विकट निवारंण कारण, वर कुंजर चढ़ि आया ॥ ज० २ ॥ उदधि भुजें करि शोभित तनु छवि, गुणनिधि गोमुख सुरराया ॥ ज० ३ ॥ आरत हरवा करत आरति, श्रीसंघ चित्त हुलसाया ॥ ज० ४ ॥ इति

॥ श्री भैरवजीकी आरती ॥

जैनके उद्योत भैरूँ समकित धारी । शांति सूरन भवियण सुख कारी ॥ उग्रवाला केश सिंदूर तिलक छविके । केसरके तिलक सोहे उगो मानो रविके ॥ जै० १ ॥ सिर पर मुकुट कुण्डल काने शोभतो । गल सोहे धुक धुकी हिये हार सोहनो ॥ जै० २ ॥ छड़ो लिये हाथमें देहराके वारणा । पूजा करे नरनारी रखवारीके कारणा ॥ जै० ३ ॥ रोग शोक दूर करो वैरीको भगाय दो । बालकोंकी रक्षा करो अन्न धन पुत्र दो ॥ जै० ४ ॥ पूरण कल्पतरू चाहे फलदाता है । पूजा लेवें नित प्रति रागे रंग माता है ॥ ॥ जै० ५ ॥ इति ॥

॥ श्री गौतमस्वामीकी आरती ॥

जय जय गणधारी, गौतम गोत्र इन्द्रभूप नामे, भवियण हितकारी ॥ ज० ॥ अष्टापद गिरी भानु आलम्बन, चौविस जिन ध्याया ।

पन्द्रह सौ तिरोत्तर तापस, ते सहु समझाया ॥ ज० १ ॥ दी दीक्षा जिनको निज करसे वे शिवपद पाया । अंत वीर संयम 'नेह त्याग कर, केवल उपजाया ॥ ज० २ ॥ पद्मोदय कहे बारह वर्ष पर, पंचम गति पाई । दिलीप चरण सेवें कर जोड़ी । जय शिवपद दाई ॥ ज० ३ इति ॥

॥ श्रीसुधर्म्मा स्वामीकी आरती ॥

जय २ पटधारी, भव्य निस्तारी, शिव सुख दातारी ॥ ज० ॥ पंचम गणधर सुधर्म्म स्वामी पटधर पद पाया । वीर प्रभु निर्वाण गये पर, शासन दीपाया ॥ ज० १ ॥ जिन भाषित त्रिपदी अनुसारे, पूरब विस्तारे । द्वादश अङ्ग उपदेश करीने, भवियणकुं तारे ॥ ज० २ ॥ निज गुरुसेती बीस वर्ष पर, पाम्यो शिव थाने पद्मोदय गुरु चरण पसायें, दिलीप लहे ज्ञाने ज० ३ इति ॥

लघु-शान्ति स्तव ।

शान्तिं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताऽशिवं नमस्कृत्य । स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमितिनिश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् । शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा,—सम्पत्तिसमन्विताय, शस्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्ति देवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय । भुवनजनपालनोद्यत,—तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिशाच,—शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येतिनाममन्त्र,—प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवती ! विजये ! सुजये ! परापैरजिते ! अपराजिते !

जगत्यां जयतीति जयावहे! भगवति ! ॥ सर्वस्यापि च सङ्घस्य, भद्रकल्याणमंगलं प्रददे। साधुनां च सदा शिव,—सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीया ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे! निर्वृति-निर्वाणजननि ! सत्वानाम् । अभयप्रदाननि-रते ! नमोस्तु स्वस्तिप्रदे ! तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां शुभावहे नित्यमुद्यते ! देवि ! सम्यग्दृष्टीनां धृति,—रतिमतिबुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम् । श्रीसम्पत्कीर्तियशो,—वर्द्धनि ! जय देव ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलि-लानलविषविषधर,—दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः रा-क्षसरिपुगणमारी,—चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिं, कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम् ॥ १३ ॥ भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति,-तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु

कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो ह्रौं ह्रीं हूं ह्रः यः क्षः फूट् फूट् स्वाहा ॥ १४ ॥
एवं यन्नामाक्षर,—पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति श्रीपूर्वसूरिदर्शित, मन्त्रपदविदर्भितः स्तवः शान्तेः । सलिलादि भय विनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोतिभावयति वा यथायोगम् । स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्तेविघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥

॥ समाप्त ॥